वे उसे नहीं रोक सके

डॉ. रामनारायण व्यास

वे उसे नहीं रोक सके

(एकांकी-संग्रह)

●

लेखक

डॉ० रामनारायण व्यास

●


प्रत्यूष प्रकाशन
रामबाग-कानपुर

मूल्य ●

चार रुपये

पुस्तक ●

वे उसे नहीं रोक सके

लेखक ●

डॉ० रामनारायण व्यास

प्रकाशक ●

अनूप प्रकाशन, रामबाग, कानपुर-१२

प्रकाशनकाल ●

अक्टूबर, १९६६

मुद्रक ●

शिवकान्त त्रिपाठी

मानक प्रिन्टर्स, आनन्दबाग, कानपुर-१

नवयुग के मानवतावादी मनीषियों

को

सादर, सस्नेह

समर्पित

प्रस्तावना

प्रस्तुत एकांकी एवं रेडियो नाटक-संग्रह पाठकों के समक्ष रखते हुए मुझे हर्ष हो रहा है।

औद्योगीकरण के इस युग में मानव-जीवन अत्यन्त ही व्यस्त हो गया है। कभी हमें आफिस जाने की जल्दी है, कभी स्कूल और कालेज और कभी किसी मिल या कारखाने की। छह दिन की सतत भाग दौड़ के बाद जब एक दिन अवकाश मिलता है, तो उस दिन भी आज का इन्सान व्यस्त ही अधिक रहता है। घर के वे सभी काम जो आफिस जाने या बस पकड़ने के उपक्रम में छह दिन से जमा हो गये हैं, एक ही दिन निपटाने को हम बाध्य है। हमारे त्योहार और संस्कार हमें अलग व्यस्त रखते है।

निश्चय ही इस व्यस्ता के बीच लम्बे उपन्यास या लम्बे नाटक पढ़ने की फुरसत हमें नहीं मिलती। इसीलिए छोटी कहानी एवं एकांकी तथा रेडियो-नाटकों का जन्म हुआ। ये दोनो हमारी व्यस्त मजबूरी की उपज हैं।

वैसे तो कहानी और नाटक एक वैयक्तिक पसन्दगी की चीजें हैं। मगर नाटक में भावनाओं एवं विचारों की अभि-व्यंजना अधिक प्रभावशाली ढंग से हो सकती है, और होती

है। सिनेमा के इस युग में नाटक का रंगमंच कभी भी जम सकेगा, इसमें मुझे सन्देह है। मगर नाटक, विशेषकर एकांकी तथा रेडियो नाटक पढे जरूर जाते रहेंगे। इसलिए आज नाटकों में भी नाटकीयता ढूंढने के स्थान पर हमें उनमें सहज, सरल पठनीयता, ढूढ़ना चाहिए। हमारे युग के बड़े से बड़े नाटक, जिनमें स्वर्गीय प्रसादजी के 'चन्द्रगुप्त मौर्य', तथा अन्य नाटक भी सम्मिलित है, इसी दृष्टि से सफल कहे जा सकते हैं। साहित्य में उनका स्थान भी इसी दृष्टि से बन पाया है। प्रस्तुत एकांकी तथा रेडियो नाटकों में भी इसी बात को पाठक पायेंगे। वे छोटे हैं और मर्म की बात को थोड़े में, मगर सहज, स्वाभाविक ढंग से कहने की कोशिश करते हैं। समाज की समस्याओं के प्रति जागरूक साहित्यिक चूंकि उन समस्याओं के प्रति उदासीन नहीं रह सकता, और साहित्य तो समाज का प्रतिबिम्ब ही माना गया है, इसलिए समाज की कुछ समस्याओं की ध्वनि काल्पनिक नामों तथा कथानकों के माध्यम से प्रस्तुत संग्रह के नाटको में पाठक पायेंगे। लेखक का उद्देश्य सिर्फ इतना है कि हम इन समस्याओं पर अपना ध्यान केन्द्रित करें ताकि सामाजिक प्रगति का पथ हमारे सामने अकंटक रूप से प्रकट हो सके।

२-१०-६६ डॉ० रामनारायण व्यास

अनुक्रमाणिका

वे उसे नहीं रोक सके

पात्र-परिचय

मदालसा	:	एक वृद्धा राजपूतनी
वीरसिंह	:	उसका लड़का
कमला, विमला	:	उसकी लड़कियाँ
श्यामला	:	वीरसिंह की वाग्दत्ता पत्नी

मदालसा, कमला, विमला तथा श्यामला समवेत स्वर में निम्नलिखित गीत गा रही हैं :—

प्रभु तुम अब हाथ बढ़ाओ !
मेरी तरी फँसी भँवर में
सूझ न पड़ता मुझे लहर में
करुणाकर, अब मुझे बचाओ !
पग-पग पर काँटों की माया
चल-चल कर है जी घबराया
फूलों का पथ मुझे दिखाओ !

गीत थमता है, उसके तुरन्त बाद एकाएक जाने की पद-ध्वनि :

विमला : मांजी कहां गईं ?

कमला : सोने गई होंगी। रात जो हो गई है।

विमला : नहीं एकान्त में रोने गई होंगी।

कमला : रोना स्वाभाविक है, विमल, मगर जगसिंह का शव लाया जाने वाला है और मांजी एकान्त में जा रही हैं।

विमला : कौन जगसिंह ?

कमला : पगली, भाई को ही भूल गई।

विमला : दीदी, भैया तो बहुत बहादुर थे— उन्हें कौन जीत

सकता था ? फिर वे वीरगति को कैसे प्राप्त हुए ?

कमला : यवन बदमाश हैं। उन्होंने भैया को सोते में मार डाला। पर देख तू ऐसी बैठी न रह। जा बगिया में से फूल ले आ। भैया को पहिनायेंगे।

विमला : मगर शव कैसे लाया जा सकेगा ? वह तो यवनों के अधिकार में है और सुना है उस पर बड़ा कड़ा पहिरा बिठा दिया गया है।

कमला : यही तो नगर में चिन्ता का विषय बना हुआ है।

विमला : दीदी, यह युद्ध तो बहुत ही भयानक सिद्ध हुआ है। इसी युद्ध में हमारे पिताजी को यवनों ने धोखे से मारा। उनका शव लेने बड़े भाई गये तो वह भी खेत रहे। छोटे भाई गये तो वह भी मारे गये।

कमला : मगर इससे हमारे दिल थोड़े ही छोटे हुए है।

(एक द्रुतगति में आता पद-चाप)

मदालसा : कमला, वीरसिंह कहाँ गया ?

कमला : अभी बाहर से नहीं आया, मांजी।

मदालसा : देखो उसे पता मत चलने देना कि उसका बड़ा भाई भी रणक्षेत्र में काम आ गया है.........नहीं तो वह भी जाने की जिद करेगा। जगसिंह के साथ ही तो जाने के लिये मचल रहा था। बड़ी मुश्किल से उसको रोका था।

कमला : ऐसा ही होगा माजी । दुखी मत होओ ।

मदालसा : कैसे दुखी न होऊँ बेटी, मेरे देखते ही देखते पति, बेटे सभी खतम हो गये– सिर्फ वीरसिंह ही बचा है ।

कमला : मांजी आप क्षत्रिय हैं । क्षत्रिय-माता कभी अधीर नहीं होती । पिताजी और भाइयों ने लड़ते-लड़ते वीरगति पाई है । यह क्या गौरव की वस्तु नहीं ?

मदालसा : पर मैं मां भी तो हूँ । मेरा सर्वस्व नष्ट हो जाये और मैं कराह भी न सकूं, यह कैसे सम्भव है बेटी !

कमला : भावना से कर्तव्य ऊँचा होता है मांजी ।

मदालसा : कुछ भी हो बेटी, अब अधिक सहन करने की शक्ति नहीं मेरी ।

कमला : विमला जा न । बगिया से फूल लेकर जल्दी आ ।

मदालसा : फूल क्यों मँगा रही है, बेटी ?

कमला : मांजी, तुम्हें नहीं मालूम कि जगसिंह भैया का शव लेने कोई गया है, फिर आने ही वाला है । तुम माला नहीं पहिनाओगी उन्हें ?

मदालसा : जरूर पहिनाऊंगी बेटी : मगर शव तो आये ।

कमला : जरूर आयेगा । उदयपुर के रणबांकुरों की वीरता कभी व्यर्थ नहीं जा सकती ।

मदालसा : ऐसा ही हो बेटी.........

कमला : मांजी, मैं तब तक एक गीत गाऊं.........

मदालसा : सुना, बेटी ।

कमला : मेरो मन अनत कहाँ सुख पावे ।
जैसे उड़ि जहाज को पंछी, फिरि जहाज पर आवे ।

(एक पद-चाप तथा गीत का थमना)

विमला : दीदी, कितने फूल की माला लाऊं ?

कमला . एक सौ आठ ।

मदालसा : नहीं बेटी १००८, तू सारी बगिया के फूल ले आ फूलपत्ती सभी कुछ । सभी का हार बनाकर समर्पित कर बेटी ।

(एकाएक द्रुतगति से आती पद-ध्वनि)

वीरसिंह . क्या मांजी यह सच है ?

मदालसा : (डरते हुए) क्या सच है, बेटा ?

वीरसिंह : कि जगसिंह भैया भी पिता जी के शव को लाने के प्रयत्न में वीरगति को प्राप्त हुए ।

मदालसा : किसने कहा, बेटा ?

वीरसिंह . पुरोहितजी ने ।

मदालसा : झूठ है बेटा, जगसिंह को कौन मार सकता है । वह तो अमर है ।

कमला : हां, भैया, जगसिंह भैया तो अमर है ।

वीरसिंह : नही मांजी, तुम झूठ बोल रही हो । मैं अब एक क्षण यहां नही ठहर सकता ।

मदालसा : कहां जायेगा ?

ीरसिंह : रणक्षेत्र में ।

मदालसा : बेटा जिद नहीं करते। तू चला जायेगा तो हमारा संरक्षण कौन होगा? और फिर अभी तेरी उमर ही क्या है?

वीरसिंह : अट्ठारह साल मांजी। पर मांजी, वीरता की कोई उमर नही होती। अभिमन्यु ने इसी उमर में बड़ों-बड़ों को मजा चखा दिया था।

मदालसा : नही, बेटा मैं तुझे नहीं जाने दूंगी।

वीरसिंह : मैं जरूर जाऊंगा। मेरे पिता और भाइयों के शव उन कुत्तों के हाथ में हो और मैं घर में चूड़ियां पहिनकर देखता रहूं– मांजी यह कभी नही हो सकता। मांजी यदि मैं अट्ठारह साल का न होकर यदि अट्ठारह माह का या अट्ठारह दिन का भी होता तो भी जरूर जाता।

कमला : भैया, ऐसी जिद क्यों कर रहे हो?

वीरसिंह : कमला बहिन, तुम भी मांजी का कहना मानने लगी। मांजी तो वृद्ध हैं। उनकी कर्तव्य की धारा भावना के अवरोध से बह नही पा रही है। पर तुम तो समझती हो, सोच सकती हो।

कमला : तुम्हारा कथन सही है, भैया। मगर माता का दिल भी तो नहीं दुखाना चाहिए और इस अवस्था में तो कदापि नहीं।

वीरसिंह : राज्य और वश की मर्यादा को अक्षुण्ण रखने में यदि मैं मांजी की भावना की रक्षा न कर सकूं

तो देवता भी नाराज न होंगे बहिन।

विमला : हमारा क्या होगा, भैया ?

वीरसिंह : जो देश की अन्य नारियों का। कुछ नही तो जौहर तो है ही।

मदालसा : वीरसिंह यदि तू गया तो मेरी लाश पर पैर रखकर ही तुझे जाना होगा।

वीरसिंह : यह तुम्हें क्या हो गया है मांजी ? मोह के तार इतने न तानो कि कर्तव्य का गला घुट जाये।

मदालसा : देख बेटा, यदि तू भी रणक्षेत्र में चला गया और वापस न आ पाया तो तेरे पितरों को जल कौन देगा ?

वीरसिंह : मैं खून की बलि देने जा रहा हूँ मांजी। जिससे पितरों की प्यास हमेशा के लिए बुझ जाये।

मदालसा : वीरसिंह, तू नहीं जानता, बेटा कि मैंने तेरे लिए एक सपना देखा था।

वीरसिंह : क्या सपना था मांजी ?

मदालसा : कि तू बड़ा होगा।

वीरसिंह : फिर मांजी ?

मदालसा : चांद सी सुन्दर, बसन्त सी मनोहर बहू आयेगी।

वीरसिंह : फिर मांजी ?

मदालसा : तेरे गुलाब सा बेटा होगा।

वीरसिंह : फिर मांजी ?

मदालसा : फिर तू बूढ़ा होगा।

वीरसिंह : फिर माँजी ?

मदालसा : आह्हा बेटा, तू क्या कहलाना चाहता है ?

वीरसिंह : वही तो तुम कहना नहीं चाहती। मौत के पाश से कौन भाग सका है ? मौत पर आदमी का वश नहीं। मगर मौत के प्रकार पर तो जरूर है। वह चाहे तो खूबसूरत से खूबसूरत मौत वरण कर सकता है। और माँजी तुम्हीं बतलाओ रणक्षेत्र में वीरगति प्राप्त करने से अधिक सुन्दर मौत दुनिया में है, या हो सकती है ?

मदालसा : पर दिल नहीं मानता बेटा।

वीरसिंह : नहीं माँजी, तुम्हारा दिल तो बहुत बड़ा है। यह तो भावुकता की एक बदली है जो तुम्हारे निरभ्र हृदयाकाश में छा गई है। बरसकर अपने आप खतम हो जायेगी यह।

मदालसा : कुछ भी हो बेटा मैं तुझे नहीं जाने दूंगी।

वीरसिंह : तो सुन लो माँजी मैं भी आज से इस घर में अन्न जल ग्रहण नहीं करूंगा। कर्तव्य से विमुख होकर कुल को कलंक लगाकर एक क्षण भी जीना मेरे लिए असम्भव है।

(एकाएक प्रवेश होने वाली मधुर पग-ध्वनि)

मदालसा : ले श्यामला भी आ गई। बेटी तू ही इसे रोक। श्यामला का कहना तो तुझे मानना ही होगा। तेरी वाग्दत्ता जो ठहरी।

कमला हाँ श्यामला भाभी, भैया को रोको : रणक्षेत्र मे जाने की जिद छोड़ ही नहीं रहे हैं।

श्यामला . नही बहन मैं इन्हें रोकने वाली कौन ? ये तो अपने ही मन के मालिक हैं। मेरा काम तो सिर्फ आज्ञा-पालन है।

मदालसा : बेटी तेरा सुहाग, तेरे ही सामने पतंगे की तरह खतम होना चाहता है और तू चुप है ?

श्यामला : नही माँजी, मेरा सुहाग कभी खत्म नहीं होगा। वह तो जन्म-जन्मान्तरों से अक्षुण्ण रूप से चला आ रहा है और चलता रहेगा। वह अक्षय है, अमर है, अनश्वर है।

कमला . खैर यह सब तो ठीक है। पर भगवान की सौगन्ध खाकर कहो, भाभी तुम्हरा दिल क्या कहता है ?

श्यामला : दिल क्या कहता है ? उसका कहना मैंने आज तक नहीं सुना। मेरा दिल और इनका दिल अलग कब रहा है– जो अलग भाषा बोलेगा ?

कमला : नहीं भाभी बात को बढ़ाओ मत। क्या वह नहीं कहता कि भैया न जायें तो अच्छा है ? बोलो चुप क्यों हो ?

विमला : लो माँजी माला बन गई।

मदालसा : जिसे माला पहिनाना है वह तो आया ही नही।

(बाहर हर-हर-महादेव का घोष)

वीरसिंह : मांजी अब मैं अधिक नहीं रुक सकता । या तो तुम आज्ञा दो या फिर मैं इसी खड्ग से अपने शीश को काटकर तुम्हारे चरणों में रख दूं ताकि तुम्हारा मोह हमेशा के लिए मिट जाये ।

कमला : मांजी, भैया को जाने दो । उन्हें आशीर्वाद दो कि वह विजयी होकर लौटें ।

मदालसा : मगर मेरा दिल"......

कमला : गुलाब का काम है कांटो मे खिलना और वीरों का काम है युद्धों में मुस्कराना । गुलाब को कभी किसी पत्ती ने नहीं टोका कि वह कांटों मे न खिले । मांजी स्वस्थ होओ और अमर आशीश दो ।

वीरसिंह : हां मांजी, देर हो रही है ।

श्यामला : मांजी, जो फूल बलिपथ पर बिछने को ही खिला है, उसे मोह-भोग के कीचड़ में मत सानो । खुशी खुशी आशीर्वाद दो ।

मदालसा : तुम लोग नही मानते— आह ।

विमला : लो मांजी कुंकुम-थाली ।

मदालसा : अच्छा बेटा जा । तेरा कहना ही सही है । अंगारे का काम जलना है । विमल मेरी माला तैयार हो गई ?

विमला : हां मांजी ।

मदालसा : जा बेटा, चांद और सूरज को रोशन करने वाला तेरा जौहर रणक्षेत्र मे अपने तीव्रतम रूप में चमके।

कमला : मगर मांजी यह हार तो.........

मदालसा : बेटी अब सोचने-समझने की जरूरत नही।

श्यामला : आर्यपुत्र जाओ और दोनों लोकों में यशपताका फहराकर वापस लौटो। हम सब फिर मिलेंगे जरूर, यहा नहीं तो तारों के लोक में हमारी मुलाकात होगी।

वीरसिंह : अच्छा मां चला ! हर-हर महादेव !

(आंधी की तरह जाते पद-चाप)

मदालसा : तू जरूर जा बेटा। मैं तो सठिया गई थी। जिस बलि पर हजारों फूल चढ़ चुके हों उसी पर चढ़ कर यशस्वी हो। मैं तेरी प्रतीक्षा करूंगी– तुम सब की प्रतीक्षा करूंगी, यहां, वहां, सब जगह, सब जनमों में।

संगीत

और पंछी उड़ गया

पात्र-परिचय

गोविन्द	:	एक आफिस क्लर्क
राधा	:	उसकी पत्नी
गोपाल	.	राधा का पालतू सुग्गा

प्रथम दृश्य

(रात के ९ बजे शहनाई का २,३ मिनट तक बजना और फिर उस मधुर शहनाई के बाद ही कुछ बच्चों की आवाज 'नई भाभी आई', 'नई भाभी आई।')

पहिला बच्चा : दिनेश तूने नई भाभी को देखा ? बिल्कुल अच्छी है, अच्छी-अच्छी बातें करती है।

दूसरा बच्चा : योगेश और तूने देखा ? दिखने में कितनी अच्छी है। लम्बी नाँक, बड़ी-बड़ी आखें व गोरा गोरा रंग।

तीसरा बच्चा : बिल्कुल मीनाकुमारी जैसी है।

पहला बच्चा : चल हट मीनाकुमारी से भी अच्छी है, क्यों है न दिनेश ?

दूसरा बच्चा : हाँ-हाँ, इस साले मिठ्ठू को क्या मालूम।

(गोविन्द के आने की पद-चाप)

गोविन्द : अरे दिनेश, योगेश, मिठ्ठू तुम अभी तक सोये नहीं। यह देखो मैं तुम्हारे लिये क्या लाया हूँ।

सब बच्चे : मिठाई।

गोविन्द : जाओ, अभी भाग जाओ और मिठाई खाओ, समझे।

(सब बच्चे भाग जाते हैं। उनके भागने की आवाज)

गोविन्द : राधा घूंघट खोल भी दो। यह मत समझो कि मैंने तुम्हें देखा नहीं है। तुम्हारे पिताजी ने खुद तुम्हें मुझे दिखाया है। राधा– घूंघट खोलो न। तुम नहीं खोलोगी– अच्छा तो मैं ही खोल देता हूँ।

राधा : शरम लगती है। आप जबरदस्ती न करें, मैं स्वय घूंघट खोलती हूँ।

गोविन्द : हाँ घूंघट के पट खोल, तोहे पिया मिलेंगे (हंसता है) शादी के बाद तो तुम्हें तन-मन का घूंघट खोल देना है। पति-पत्नी में पर्दा कैसा ?

राधा : (बनती हुई) आप बड़े वो हैं।

गोविन्द : वो क्या, चमार, बिल्ली ?

राधा : राम-राम क्या बोलते हैं आप ?

गोविन्द : वो का मतलब समझूं तो कैसे ?

राधा : (हंसते हुए) वो माने शरारती, समझे मिस्टर।

गोविन्द : समझ गया मैडम। वाकई राधा तुम, राधा निकलीं। कन्हैया की राधा भी शायद इतनी मीठी न होगी।

राधा : अच्छा जी कन्हैया की राधा तक पहुंच गये। मैं तो तुम्हारी राधा हूँ।

गोविन्द : हाँ तुम मेरी हो। आज का यह चमकता हुआ पूनम का चाँद, यह तारे की साड़ी पहने हुए

रजनी, हवा का संदेश सुनाने वाले ये झाड़ सभी कहते हैं कि तुम मेरी हो और ईश्वर करे तुम सदा मेरी ही रहो। सदा तुम मेरे मन-मंदिर मे चाँदनी बनकर खिली रहो।

राधा : आखिर चाँदनी चाँद से जुदा कैसे रह सकती है? यदि मैं चाँदनी हूँ तो तुम मेरे चाँद हो। आज का यह चाँद हमें कभी जुदा न देखे। हमारी जिन्दगी में हमेशा रस बरसाता रहे।

गोविन्द : रस क्यों बरसायेगा मेरी राधा, जब तुम्हारी जैसी मीठी, सुन्दर पत्नी हो तो मेरी जिन्दगी में रस के अतिरिक्त और कुछ रह कैसे सकता है?

राधा : आज तो पहला ही दिन है, और आज आनन्द का भी दिन है। मगर जिन्दगी की किश्ती हमेशा सरल मौजों में ही नहीं तिरती। उसे तो सैलाबों और तूफानों का भी सामना करना पड़ता है। यदि उन भयंकर घड़ियों में भी हमारा साथ नही छूटा तो हमारा जीवन सार्थक होगा।

गोविन्द : तुम कल की चिन्ता न करो। राधा, आने वाले कल का निर्माण भी आज ही करना है। और तुम्हारी जैसी संगिनी हो, तो सैलाब, सैलाब नही रह सकता। जिन्दगी में मायूसी तब होती है जब आदमी अपने को अकेला पाता है। मन का अकेलापन, उसकी जिन्दगी में गर्दिश की बदली

बन जाता है। जब तक तुम हो, वह अकेलापन कभी गिरफ्तार नहीं कर सकेगा। बोलो, तुम कभी अपने प्यार का आंचल मुझसे छुड़ाओगी तो नहीं ?

राधा : यह तो मेरे पूछने का सवाल है। तुम मेरे बिना रह सकते हो, किन्तु मैं तुम्हारे बिना नहीं। मैं वह लता हूँ जो तुम्हारे साये में ही पनप सकती है। पति नारी का एकमात्र सहारा है। पर मैं हरचंद कोशिश करूंगी कि कभी तुम्हारा बोझ न बनूं।

गोविन्द : आज की रात गम्भीर बातों के लिए नहीं राधा। आज तो बस प्रेम की ही बात हो। आज पूनम का चांद इसलिए क्यों मुरझाये कि कल अमावस की काली घटा उसे डस सकती है। हमें तो 'आज' को जीना सीखना है। 'आज' अपने में इतना पूरा है कि 'कल' की अपेक्षा उसे नहीं।

राधा : ऐसी बात तो नहीं। हर एक 'आज' 'कल' से जुड़ा है। उसके आगे और पीछे दोनों ओर 'कल' है। कल हमारी शादी हुई, इसलिए आज हम मिल रहे हैं और आने वाला प्रत्येक 'कल' प्रत्येक दिन हमें प्रसन्न देखेगा। देखेगा, क्योंकि हर पिछले 'कल' में हमने प्यार की ज्योति को अक्षुण्ण रखा है जिस दिन वह प्रेम का प्रकाश धीमा हो

जावेगा, जिन्दगी में सूनापन हाथ फैलाने लगेगा।

गोविन्द : तुम सुन्दर ही नहीं, विदुषी भी हो।

राधा : यह तो जब तक मैं सारा जीवन जी न लूं तुम कैसे कह सकते हो? छोड़ो भी इन बातों को। आज तो आनन्द का ही दिन है। मेरी जिन्दगी के सपने आकार ग्रहण कर रहे है। मैं आज बहुत खुश हूँ इस चाँद से भी ज्यादह। इस फूली हुइ रात से भी ज्यादह।

गोविन्द : मेरी राधा तुम खुश हो तो मैं भी उतना ही खुश, –(बारह बजे के घंटा की टन-टन आवाज) लो बारह बज गये। अब सो जाना चाहिये। नहीं तो सुबह जल्दी नींद न खुलेगी और लोगों को हँसने का एक बहाना मिल जायेगा।

द्वितीय दृश्य

(समय सायंकाल ६ बजे, गोविन्द का खट-खट करती हुई आवाज के साथ प्रवेश)

गोविन्द : राधा खाना परोसो हाथ मुंह धोकर आता हूँ।

राधा : जरा सुस्ता तो लेते।

गोविन्द : भूख तगड़ी लग रही है। आज तो काम के मारे जरा भी फुरसत नही मिली।

राधा : खाने में जरा समय लगेगा।

गोविन्द : (ऊंची आवाज में) क्यों अभी तक रोटी भी नहीं बनी रानी जी से। आखिर तुम बैठी-बैठी क्या

मक्खी मारा करती हो ? क्या फायदा तुम्हारा यदि तुम समय पर रोटी भी नहीं दे सकती। हमारी भी क्या जिन्दगी है। बीस साल से आठ घंटे बैल की तरह आफिस में जुटा रहता हूँ। घर आता हूँ तो बीवीजी रोटी भी तैयार नहीं दे सकती।

राधा : आप तो ऐसे बोल रहे हैं जैसे कोई रोज-रोज बेवक्त खाना मिलता हो। रोज तो मैं आपके आने के पन्द्रह मिनट पूर्व ही रसोई बना देती हूँ। मगर आज रामेश्वर की बहू आ गई थी, उसके बच्चे की शादी है न। मैंने लाख कहा, मैं इस वक्त नहीं जाऊंगी। उनके आने का वक्त है और खाना बनाना है। "उनके" बगैर पूछे जाने से वे नाराज होंगे, किन्तु वह मानी ही नहीं। कहने लगी कि भैया को मना लूँगी। लाचार होकर जाना ही पड़ा। जल्दी-जल्दी भागकर आई, फिर भी देर हो ही गई।

गोविन्द : पेट भरा हो तो हर एक की तबियत व्याह-शादी में जाने, गाने-नाचने की होती है। मुश्किल तो हम जैसों की है कि जिन्हें आठ घंटे रोजी से लड़ना पड़ता है और फिर भी वक्त पर खाना नसीब नहीं होता। लगता है बाजार भी गई थी। यह नया पिंजरा कहाँ से आया ?

राधा : (डरती हुई) मैं ही लाई हूँ। रास्ते मे बाजार पड़ता था और गोपाल का पिंजरा जरा टूट सा गया है। यदि बिल्ली गिरा दे तो टुकड़े हो जावे। और गोपाल को सरलता से मुंह मे दबा ले। इसलिए ले आई, तुमसे कहती तो तुम चिढ़ते।

गोविन्द : आखिर क्यों तुम मुझे, दिवालिया बनाने को तुली हो ? क्या जरूरत थी इस नये पिंजरे की ? गोपाल को बिल्ली ले जाती तो कोई आसमान नहीं टूट पड़ता। कितने पर आग लगा आई ?

राधा : (डरते हुए) सिर्फ डेढ़ रुपये में ही तो आया है। मैं कोई मंहगा थोड़े ही लाई हूँ। रामेश्वर के यहां भी पैर-पैर गई थी।

गोविन्द : डेढ़ रुपया कोई चीज ही नही होती। रईस की बेटी हो न ? डेढ़ रुपया में जानती हो, महीने भर की तरकारी आती। डेढ रुपया में मैं तीन महीने कटिंग करा सकता हूँ।

राधा : तुम तो आज कल बड़ी कजूसी पर उतर आये। काम की चीज तो खरीदनी ही पड़ती है। मैंने एक पैसा भी अपने ऊपर खर्च किया हो तो सौगन्ध ले लो।

गोविन्द : रईस की बेटी, तुम्हें कमाना पड़े तो पता चले कि पैसा कैसे आता है। ७५) रु० के लिये दिन भर कुली-जैसा आफिस में काम करता हूँ।

तब कहीं थोड़ा पैसा आता है।

राधा : तुम तो आज कल जरा-जरा सी बात पर बिगड़ने लगते हो। आखिर मैं भी तो घर में कुछ हूँ। आखिर तुम दिन भर काम करते हो तो मैं भी कोई बैठी नही रहती। खाना बनाना, कपड़े धोना बर्तन मांजना तथा झाड़ू लगाना, आदि बीसियों काम है। काम करने का यह मतलब थोड़े ही है कि जरा-जरा-सी बातों पर बिगड़ने लगो। (रुआसी होकर) और तुम्हें इस सुग्गे से इतनी जलन क्यों? भगवान ने कोई बाल-बच्चे तो दिये नही, इसलिये इसी से दिल बहलाती हूँ घर में बैठी-बैठी। बच्चे होते तो शायद भूखे मार डालते।

गोविन्द : (खीजते हुए) कैसी औरत है। मैं सुग्गे से जलन रखता हूँ? तुम्हें यह भी मालूम है कि ईर्ष्या अपने बराबर वाले से की जाती है और सुग्गा तो आखिर पक्षी है। नालायक कहीं की, मेरी बराबरी उस सुग्गे से करती है। फूहड़, गधी, कहीं की।

राधा : (भावुकता से) सुग्गा पक्षी हुआ तो क्या। कितने ही मनुष्यों से अच्छा है। वह प्रेम करना जानता है और प्रेमभाव को समझने की शक्ति रखता है। वह कभी तुम्हारी तरह बिना कारण खीजता

चिल्लाता नहीं। बात-बात पर नाराज़ नहीं होता। मुझसे सदा मीठी-मीठी बोली बोलकर प्रेम जताता है। जी बहलाता है। यह सुग्गा मेरे प्यार का केन्द्र है। जिन्दगी की निराशा से भरी मेरी आँखों में यह सुग्गा ही क्षण भर के लिए सही प्रसन्नता की ज्योति ले आता है। काश, तुम मेरा हृदय चीर कर देख पाते !

गोविन्द : जिन्दगी की कठोर यथार्थताओं से जूझने वालों को, तुम्हारे दिल को टटोलने का अवकाश ही कहाँ मिलता है ? और इन्सानों को छोड़कर पशु-पक्षियों से प्यार करने वालों को मैं बेवकूफ समझता हूँ। समझीं ? बीस बरस से तुम्हारे नाज-नखरे उठाने वाला मैं भूखा रहूँ, तुम्हें परवाह नहीं। और तुम सुग्गे के पिंजरे के लिए भटकती फिरो और इस सुग्गे के पीछे मुझे लेक्चर सुनाती रहो ? मैं अभी इस सुग्गे के बच्चे को फेंक देता हूँ। न रहेगा बाँस न बजेगी बाँसुरी।

(झपटकर चलने की आवाज)

राधा : तुम्हें मेरी कसम है। यदि सुग्गे को हाथ लगाया। तुम्हारी कसूरवार मैं हूँ, मुझे चाहो जो सजा दो। बेचारे सुग्गे ने क्या बिगाड़ा है ?

गोविन्द : (लौटने की आवाज) तुम पर तरस आ जाता है। नही तो आज मैं इस सुग्गे की गर्दन मरोड़ कर

दम लेता (ललकार कर) जाओ खाना बनाओ, जाकर।

राधा : (चुप)

गोविन्द : क्या बहरी भी हो गई हो ? कानों में किसी ने ताले ठोक दिये हैं क्या ? जाती क्यों नही ?

राधा : मैं जा रही हूँ। पर तुम तरकारी ले आओ।

गोविन्द : (खीजकर) तो तरकारी भी मुझे ही लानी होगी। (चिल्लाकर) मैं कहता हूँ कि तुम सुग्गे के पिंजरे के लिए बाजार भर मे मारी-मारी फिरी और तरकारी लाना भूल गई ?

राधा : तुम बाजार में होकर नहीं आये ? तुम्ही ले आते।

गोविन्द : मैं सभी कर लूंगा, तो तुम किस मर्ज की दवा हो ?

राधा : तो क्या मैं बैठी रहती हूँ। घर का काम कोई दूसरा कर जाता है क्या ?

गोविन्द : (चिल्लाकर) मैं कहता हूँ कि अब जबान बन्द करो, नही तो ठीक नही होगा। एक तो काम से जी चुराती हो, और ऊपर से मुंहजोरी करती हो।

राधा : (रोने की आवाज मे) यह तुम नही तो और कौन कहेगा ?

गोविन्द : (चांटा मारते हुए) फिर बकवास करने लगी। जाओ खाना बनाओ। जब से मैं कुछ बोल नही

रहा हूँ, तो सिर पर चढी जा रही हो।

राधा (रोते हुए) तो अब तुम्हारे हाथ भी उठने लगे और वह भी इस उमर में। मैं जिन्दगी से सताई हुई तो क्या इतनी जलील वनना कभी स्वीकार नहीं करूंगी। मैं आज ही मायके जाऊंगी। तांगा ले आओ।

गोविन्द : हाँ जाओ, बड़ी मायके का डर बतलाती है।

राधा : जब तुम्हें मुझसे प्यार नहीं तो इस घर में मेरा क्या वास्ता। भगवान करे मैं इस घर मे कभी न आऊं।

गोविन्द : मत आना। तुम्हारी मिन्नत करने कभी नही आऊंगा, समझीं? इस सुग्गे के बच्चे को भी उठा ले जाना, नही तो सड़क पर फेक दूंगा। तुम्हारे मायके मे अन्नक्षेत्र खुला है न? वही कहीं पर इसे भी दाना खिला देना।

राधा : अब तुम इसे फेको या कुछ करो। मेरी ममता इस घर की किसी चीज पर नहीं है।

तृतीय दृश्य

(सुग्गे का "राधा-राधा" कहकर चीखना फिर चुप हो जाना)

गोविन्द : क्यों गोपाल तुम एक भी दाना मुह में नहीं लोगे? यह तो सही है कि राधा जैसा कोमल हृदय नहीं पा सका हूँ। मगर विश्वास रखो इतना संगदिल भी नही, जितना शायद, तुम

समझ रहे हो। यह तो मैं गर्दिशों, आपत्तियों से लड़-लड़कर इतना कठोर हो गया हूँ। गिरती हुई आर्थिक परिस्थितियों ने मेरे दिल को तोड़ दिया है। लगता है जैसे खुशी और प्रसन्नता इस जिन्दगी से कहीं दूर चली गई और कभी वापस नहीं आयेगी। मैं उस बगीचे की तरह हूँ जो कभी गुलजार था और बहारों को अपनी गोदी में खिलाया करता था मगर आज तो धूल और रेत के अम्बार में अपने शरीर और आत्मा दोनों को छुपाये हुए है। गोपाल, राधा तो रूठ गई तुम भी रूठ जाओगे तो मैं जिन्दा कैसे रह सकता हूँ। आज सात दिन से जब से राधा गई है, तुमने अनाज का एक दाना भी मुंह में नहीं लिया और यह अनार भी ऐसा ही पड़ा है। ये अंगूर भी ऐसे ही पड़े सूख गये। पगले, मैं राधा से झगड़ता हूँ तो क्या? उसका दुश्मन थोड़े ही हूँ। मैंने बताया न, जिन्दगी के थपेड़ों ने मेरी सूरत, मेरा धीरज, मेरा स्वास्थ्य, सब कुछ बदल डाला है। ...नहीं तो, गोपाल, आज से बीस साल पहले जब राधा पहले-पहले शादी के बाद आई तो मैं कितना खुश हुआ था। और...और सच कहता हूँ गोपाल आज की राधा को तुम पहिचान नहीं पाते, यदि उन दिनों की उसकी खूब-

सूरती देखते। अंगूरी आँखें, तुम्हारी नाक के समान सुरीली नाक, कोयल को भी लजा देने वाली उसकी मधुर वाणी और गुलाब सा ताजा दिल, ये सभी कुछ तो उसमें थे ? मैने उसे पाकर अपने आप को धन्य समझा था। परी से वह किसी कदर कम नहीं थी। आस-पास वालों ने भी मेरे भाग्य पर बधाई दी थी और मैंने भी इन बीस सालों में उसे अपने दिल का समस्त प्रेम, सारा प्यार उसी पर न्यौछावर कर दिया है। मगर कुछ तकदीर के चक्कर ऐसे चले कि आर्थिक बोझा बढ़ता गया। शादी का कर्ज अदा न हुआ कि बीमारियो ने मुझे घर दबाया। मेरे सामने दस साहब बदल गये। सभी की गालियाँ और झिड़कियाँ सुनकर अब नौकरी करने की तमन्ना बिल्कुल ही नहीं रही है। मगर नौकरी छोड़ दूँ तो जाऊं कहां ? क्या खऊँगा, व राधा व तुम्हें भी क्या खिलाऊँगा और मेरी राधा का क्या हाल हो जावेगा ? मेरी भोली राधा, मेरी अच्छी राधा। उसने मेरा बड़े से बड़ा अत्याचार सहा है और वह भी हँसते-हँसते। उसके जेवर मैंने कर्ज चुकाने के लिये बेच डाले, मगर उसने उफ तक नहीं की, चेहरे पर शिकन तक न आने दी। वह दुखी है, भगवान ने उसकी गोद के बच्चे छीन लिये। इन तूफानों ने उसकी

जिन्दगी पर अमिट निशान बना डाले हैं। उसे अगर कोई राहत दे सकता है तो वह तुम। मैं तो अनजाने ही उस पर अनगिनत अत्याचार कर डालता हूँ। मगर आज तक वह कभी इतनी नाराज नहीं हुई, जितनी कि उस रोज जब कि वह यहाँ से गई। वह तुम्हें इतना प्यार करती है, गोपाल कि तुम्हारे लिए अक्सर मुझसे झगड़ पड़ती है– आज पूरे सात दिन हो गये, मगर उसकी कोई चिट्ठी तक नहीं आई। पहिले तो वह हर रोज मुझे एक पत्र लिखा करती थी

(एकाएक सुग्गे के चीखने की आवाज और उसका गिरना)

(घबराकर) यह क्या गोपाल, तुम को क्या हो गया? तुम्हारी आँखें क्यों निकल आई, मैं कहता नहीं था कि तुम कुछ खालो। कही तुम चल तो नही बसे। गोपाल मैं राधा को क्या जवाब दूंगा। मैं लाख कहूंगा कि तुम उसके विरह में मरे हो, मगर वह कहेगी मैंने ही तुम्हें भूखों मार डाला है, गोपाल राधा का तो ख्याल किया होता।

(नीचे से एक आवाज : 'क्यों गोविन्द बाबू यही रहते हैं'– दूसरी आवाज : 'हाँ यही रहते हैं।' जीने पर खट-खट चढने की आवाज)

आगन्तुक : क्या आप ही का नाम गोविन्द बाबू है?

गोविन्द : (घबराकर) हां, हां कहिए ?

आगन्तुक : बात यह है कि सुदर्शन शहर से अभी-अभी ट्रन्क-काल आया है कि उनकी पुत्री और आपकी पत्नी राधा देवी का अभी-अभी करीब ७॥ बजे देहान्त हो गया है। मुझे उन्होंने आपको अविलम्ब सूचना देने को कहा है।

गोविन्द : तो क्या राधा सचमुच मुझ से रूठकर चली गई ! इस दुनियां से चली गई ! क्यो भाई और कुछ नहीं कहा उन्होने ? क्या बीमारी थी उसको ?

आगन्तुक : उन्होने यह भी कहा था कि राधारानी जब से आपके यहा से गई थी, बीमार थी। मगर कामता बाबू के लाख कहने पर भी उन्होने आप को सूचना नही भेजने दी। उपचार तो काफी किया गया, मगर सब व्यर्थ गया। डाक्टरों का कहना था कि उनके दिल पर कोई बड़ा शाक बैठा है।

गोविन्द : तो उसने भी उसी वक्त दुनियां से कूच किया जब कि इस पक्षी ने दम तोड़ा। गोपाल, वाकई तुम्हारा राधा से पक्का प्रेम था। तुम अपनी मालकिन के बगैर एक मिनट भी जिन्दा नहीं रहे। और मैं जो राधा पर अपना प्रेम जताते नहीं अघाता था और जिसे राधा ने अपनी जिन्दगी का मधु ऐश्वर्य लुटा दिया, अभी तक

जिन्दा हूँ। आह, भगवान मुझे इस दुनियाँ से उठा ले ताकि दो मासूम पक्षियों का हत्यारा इस दुनियाँ में न रहने पाये। आह, मैं कहीं पागल न हो जाऊँ।

(फेड आउट)

डायल नं० फोर टू जीरो

पात्र

रमेश
औरत
प्रोड्यूसर
रायटर
सेठ
अन्य

चौ० आ० : मगर सरकार उनका तो इन्तकाल हो गया।

रमेश : इंतकाल हो गया? क्या बोलते हो, जब मैं मिला था तब तो भले चंगे थे। क्या हो गया था उनको?

चौ० आ० : कहते हैं उनका हार्ट फेल हो गया।

रमेश : हार्ट फेल हो गया? मगर कब?

चौ० आ० : यही छै महीने हुए होंगे।

रमेश : छे महीने हो गये। गधा है क्या? न जाने कहाँ से बोल रहा है।

चौ० आ० : गाली मत दो साहब, कौन सा नंबर चाहिए था आपको?

रमेश : फोर टू जीरो।

चौ० आ० : हिन्दी में कहिए।

रमेश : चार सौ बीस।

चौ० आ० : हम सरकार-सरकार कहे जा रहे हैं और आप गाली दिये जा रहे हैं।

रमेश : बेवकूफ (डिसकनेक्ट करके फिर डायल करता है) हलो।

औरत : तो आपको समय मिल गया?

रमेश : क्या फरमाया आपने?

औरत : यही कि आखिर हुजूर को वक्त मिल गया इस नाचीज से बात करने का। आखिर इन्तजार की भी एक हद होती है।

रमेश : इन्तजार ? आपका मतलब प्रतीक्षा ?

औरत : जी हाँ, इन्तजार का मतलब प्रतीक्षा ही होता है। ऐसे गाफिल हो रहे हो कि दिमाग से शब्द भी गायब होने लगे ......खैर यह मर्ज ही ऐसा है। इसमें तुम्हारा क्या दोष।

रमेश : दोष ?

औरत : ओ जालिम कुछ सोचा होता कि हमने दिल दिया है कोई गुनाह नहीं किया कि इस तरह तड़पने की सजा दे रहे हो।

रमेश : तड़पने की ?

औरत : ओ हो, तो तड़पने की भी इजाजत मां बदौलत नहीं देते।

न तड़पने की इजाजत है,
न फरियाद की।
घुट-घुट के मर जाऊं,
यही मर्जी सैयाद की है।

रमेश : देखिए शेर न पढ़िए।

औरत : यह शेर नहीं दिल के छाले हैं जनाब। समझने की कोशिश कीजिए।

रमेश : पर छाले किसके सामने फोड़ रही हैं, आप ?

औरत : एक निर्दयी के सामने। जानती हूँ, अभी इश्क के इम्तिहान और भी हैं, मगर हम तो हर इम्तिहान के लिए तैयार बैठे हैं।

रमेश : तैयार बैठी हैं ?

औरत : आज शाम को दस बजे 'विमेन इन लव्ह' का शो –तुम आ रहे हो न ? पापा और ममी को इस खूबी से छांट दिया है कि तुम भी क्या याद करोगे। अकेली ही रहूंगी। नौकर को पटा लिया है। कही भी पता न चलेगा।

रमेश : देखिए।

औरत : आह, देखने के लिए तड़प रही हूँ। साइन्स ने इतनी तरक्की की मगर फोन पर टेलीव्हीजन की ईजाद न हो पाई। काश, ऐसा हो पाता ! तो आज शाम को दस बजे मिल रहे हो ना ?

रमेश . सुनिए तो,

औरत : अब बस सिनेमा हाल में ही सुनाना। खूब गुजरेगी जब मिल बैठेंगे दिवाने दो।

रमेश : आपका फोन फोर टू जीरो है ?

औरत : क्या कहा ?

रमेश : फोर टू जीरो।

औरत : (चौंककर) मुझे फोर टूवेन्टी कहने के बजाय खुदको फोर टूवेन्टी कहिए, शर्म नहीं आती; किसी लड़की के दिल की बातें इस तरह घुट-घुटकर सुनने में। रास्कल।

रमेश : बदतमीज कहीं की। बिना जाने पहिचाने

कि कौन बातें कर रहा है लगी दिल के छाले फोड़ने। यह ठनठन पाल भी पूरा ठनठनपाल निकला। क्या फोन नंबर ले रखा है कि गालियाँ पर गालियां पड़ रही है। (फिर डायल करता है, क्रास टाक आ रही है)

एक आवाज : तुमको हम इतना पगार काय के वास्ते देता है ? मैनेजर कायके वास्ते बनाया है, तुमको ?

दू० आ० : पर सेठ, यह लिमिटेड कम्पनी का मामला है।

प० आ० : लिमिटेड-विमिटेड नहीं जानता। दो लाख रुपया आज मिलना चाहिए।

दू० आ० : कोशिश करूंगा।

प० आ० : कोशिश-वोशिश नहीं। रुपया आजाना चाहिए नी तो तुम्हारी मैनेजरी गई, समझा ?

दू० आ० : समझ गया सेठ।

प० आ० : अच्छा वकील से बात कराव।

ती० आ० : नमस्कार सेठजी।

प० आ० : नमस्कार वकील साहब। सुबह-सुबह आना कैसा हुई गया ?

ती० आ० : परसों इनकम टैक्स की तारीख है।

प० आ० : सब तैयारी तो है ना ?

ती० आ० : खैर तैयारी तो हो जायेगी, पर आपके मामले बड़े आड़े-टेढ़े हैं।

प० आ० : सब मैनेजर के बखेड़े हैं। पर तुम कैसे वकील

हो जी। वखेड़े नहीं हों तो तुमको बुलायेगा कौन ?

ती० आ० : फिर भी।

प० आ० : बराबर काम करोगे तो हमारे परमानेन्ट एडवोकेट बन जाओगे।

ती० आ० : अच्छी बात है। तो आप बेफिक्र रहिए।

रमेश : हलो।

प० आ० : कौन बीच में बोल रहा है। कोई चार सौ बीस आदमी है।

(फोन बन्द कर देता है)

रमेश : देखो, बदमाश सरकार को भी ठगने से नही चूकता। (फिर डायल करता है, क्रास टाक)

एक आवाज : पचास हजार गाँठें दे सकता हूँ।

दू० आ० : मगर कब तक ?

प० आ० : कल ही लो। स्टाक कर लिया है। पर यह पाकिस्तान भेजेंगे कैसे ?

दू० आ० : तुम घबराओ मत। अरेन्जमेन्ट अपने पास है।

प० आ० : पर देखो किसी को पता नहीं चले। नहीं तो इज्जत मिट्टी में मिल जावेगी।

दू० आ० : नही सेठ, घबराव नहीं अपना काम चोखा होता है और फिर आज-कल पैसे के बजाय इज्जत बहुत सस्ती है।

प० आ० : फिर भी चौकसी से काम होना चाहिए।

रमेश : हलो,

प० आ० : कोई चार सौ बीस आदमी सुन रहा है। फोन वन्द कर दो।

रमेश : देखो साला देश के साथ गद्दारी कर रहा है और मुझे चार सौ बीस कहता है। (फिर डायल करता है) हलो,

एक आ० : बुलाता हूँ साहब, (फोन मे से धीमी आवाज आती है)

पुरुप आ० : वहीदा डार्लिंग।

स्त्री कंठ : कौन मुलाईम खाँ बोल रहे है ?

पु० कंठ : भाई मुवाफ कर देना, शाम को नहीं आ पाया ?

स्त्री कठ : इस नाचीज की क्या जुर्रत कि हुजूर से नाराज हो सके ? हम तो कहते हैं, 'भुलाना हमारा मुबारिक-मुबारिक, मगर शर्त यह है न आद आइयेगा।"

पु० कंठ : नहीं-नहीं ऐसी बात नही है। तुम तो जानती हो कि इस दिले बेकरार का क्या हाल है।

स्त्री कंठ : यदि यही बात थी तो गरीब परवर कल आये क्यों नहीं ? महफिल सूनी पड़ी रही। सितार सिसकती रही। नूपुर गमगीनी में डूबे रहे।

पु० कं० : क्या बताऊँ, बात दरअसल यह है कि चुनाव सर पर आ रहे हैं। आखिर पार्टी का नेता

हूँ । सामने वाली पार्टी सिर उठा रही है ।

स्त्री कंठ : तो सिर कुचल दो ना ?

पु० कंठ : वह तो खैर कुचल ही दूंगा, तुम्हारी दुआ से । आज के अखबार पढ़ोगी तो पता चल जायेगा कि उनकी कल की मीटिंग में हुड़दंग हो गया है । लोग तितर-बितर हो गये है सुनने वाले भाग गये, और सुनाने वाले टापते रहे ।

स्त्री कठ : अच्छा ?

पु० कंठ : हां, अपने आदमियों ने ऐसा रंग जमाया कि सामने वालो का रंग फीका पड़ गया । इस मीटिंग पर बड़ा दारोमदार था । एक दो और ऐसी मीटिंगें बिगड़ी कि पार्टी के दम उखड़े ।

स्त्री कंठ : मगर कहीं इस बात का पता चल गया कि इसके पीछे आप थे तो ?

पु० कठ : कच्ची गोलियां नही खेला है, मुलायमखां । मुलायमखां की तो सिर्फ बातें ही मुलायम होती हैं । उसकी घातें इतनी जबरदस्त होती हैं कि सामने वाले का होसला पस्त हो जाता है ।

स्त्री कंठ : तो आप जरूर आ रहे हैं ? मैं उससे कह भी

कि मेरे दिल में है।

पु० कंठ : जरूर, जरूर; कभी-कभी तो मैं भी सोचता हूँ "मुझे तमाम जमाने की आरजू क्यों हो। बहुत है मेरे लिए एक आरजू तेरी।"

रमेश : हलो।

पु० कंठ (घबराकर) हलो, आप कहाँ से बोल रहे है?

रमेश : आप फोर टू जीरो से बोल रहे हैं?

पु० कंठ : देखिए, शराफत का तकाजा है कि किसी को फोर ट्वेन्टी न कहा जाय। यदि आप फोर ट्वेन्टी की तलाश में हैं तो दूसरा घर ढूँढ़िए। (फोन बन्द)

रमेश : वा भाई, क्या तीरंदाज है? नेतागीरी, इश्क और चुनाव सभी को समेटे बैठा है।
(फिर डायल करता है। क्रास टाक)

प० आ० (प्रोड्यूसर) : तो तुम कौन-कौन देश घूमकर आया?

दू० आ० (रायटर) : सेठ, अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रान्स, जर्मनी...

प्रो० : बस-बस अपने को यह जानना था कि अमेरिका भी हो के आया है या नहीं।

रायटर : क्यों?

प्रो० : अमेरिका में फिलमें वगैरा तो बहुत देखी होगी?

रायटर : क्या करता सेठ। देखना ही पड़ता है।

हालीवुड में लोग मुझ पर इस कदर लट्टू थे कि हरेक चाहता था कि मैं उसकी फिल्म देखे बिना न जाऊं ।

प्रो० : तो अपना काम पट गया, एक करो ।

रायटर : क्या सेठ ?

प्रो० : एक चटपटी स्टोरी लिखो जिसमें जितनी भी फिल्में तुमने अमेरिका में देखी हैं उनमें से जो सबसे मस्त हो, उसकी कहानी हो । नाम-वाम बदल देना है ।

रायटर : सेठ, इस फन्दों में तो उस्ताद हूँ । मेरी जितनी भी स्टोरीज अभी तक पिक्चराइज हुई वे नकल ही थीं । इसीलिए हिट रहीं ।

प्रो० : साला क्रिटिक लोग कहता है कि ओरिजिनल स्टोरी होना चहिए, कहां से लायें ऐसे रायटर ?

रायटर : ऐसी बात नहीं कि मैं नई चीज नहीं लिख सकता ।

प्रो० : क्या पता, और उसकी जरूरत भी क्या ?

रायटर : तो बात पक्की ।

प्रो० : बिल्कुल पक्की ।

रायटर : स्टोरी, स्क्रीन प्ले, मेरा होगा । डायरेक्शन भी मेरा होगा, रोल भी मेरा होगा ।

प्रो० : होगा ।

रायटर : एडव्हान्स,

प्रो० : ले जाओ पच्चीस हजार, पर देखो, लिखना ऐसा कि लोगों को नई-नई चीज लगे। पर बाद में लफड़ा तो न होगा ?

रायटर : कैसा लफड़ा ?

प्रो० : कापी राइट के बारे में अमेरिका वाला कहीं दावा तो नहीं कर देगा ?

रायटर : अरे सेठ, उनका पिक्चर यहां आयेगा, उसके पहले तो अपना पिक्चर रिलीज हो जावेगा। फिर कापी राइट का लफड़ा कैसा ?

प्रो० : ठीक है। तो जल्दी-जल्दी काम चालू कर दो ?

रायटर : पैसा रेगुलर मिला तो काम यूं चुटकियों में खतम होता है।

प्रो० : पैसे की फिकर मत करो।

रमेश : हलो, आप फोर टू जीरो से बोल रहे हैं ?

प० आ० : शरम नहीं आती, बिजनेसमैन लोगों को फोर ट्वेन्टी कहता है।
(फोन बन्द कर देता है)

रमेश : अब तो परेशान हो गया। जी करता है, मारूं गोली इस ठनठन पाल को। पर पिताजी के खातिर एक प्रयत्न और सही। बट फर्स्ट इन्क्वायरी। (डायल करता है) हलो।

स्त्री कंठ : यस प्लीज।

रमेश : देखिये मैडम मैं दो घंटे से फोर टू जीरो लगा रहा हूँ। पर मिल नहीं रहा है। कौन से बाबा आदम के जमाने की मशीन लगा रखी है कि राइट नंबर मिलता ही नहीं।

स्त्री कंठ : आपको कौन चाहिए ?

रमेश : मि० टी० पाल, गव्हर्नमेन्ट आवशनर।

स्त्री कंठ : उनका नंबर है– ६४२०।

रमेश : फिर फोर टू जीरो किसका है ?

स्त्री कठ : किसी का भी नहीं।

रमेश : पर डायरेक्टरी में तो लिखा है ?

स्त्री कठ : वह गलत है इसीलिए शुद्धि-पत्र साथ में लगा दिया गया है।

रमेश : धत्तेरे की, यह खूब रही। अच्छी बात है, मैडम धन्यवाद। तो ठनठनपाल साहब अब तो आप मिल ही जायेंगे। (नम्बर मिलाता है) हलो।

एक स्त्री कंठ : कहिए कहां से बोल रहे हैं, आप ?

रमेश : पहिले आप बताइए, आप कहां से बोल रही हैं ?

स्त्री कंठ : ६४२०, छै हजार चार सौ बीस से।

रमेश : अच्छा, तो भाभी बोल रही हैं। भैया कहां हैं ? मैं रमेश बोल रहा हूँ।

स्त्री : वह तो कल ही कलकत्ते चले गये।

रमेश : कल ही चले गये ? बिना मुझसे मिले ?

स्त्री : हाँ, जरूरी काम था, चले गये।

रमेश : अच्छी बात है भाभी, आप से शिकायत करने से भी क्या लाभ ? टा टा टा।

(फोन बन्द करता है)

किस-किस को कोसिये, किस-किस को रोइये।
दुनियाँ ही चार सौ बीस है, मुंह ढक के सोइये।

बापू

पात्र-परिचय

गिरधारी	:	एक ग्रामीण वृद्ध,
धापू	:	गिरधारी की पत्नी,
एक चीनी	:	सैनिक अधिकारी
तोजो	:	चीनी सैनिक
एक हिन्दुस्तानी	:	सैनिक

स्थान :– (आसाम का पहाड़ी इलाका। घने जगलो मे एक झोपड़ी। आसपास खेत। समय रात के ९ बजे। दिसम्बर का माह। झोपड़ी वैसे काफी बडी है जिसमें कम-से-कम तीन चार कमरे है। एक कमरे मे जानवरो के खाने का भूसा भरा है। झोपड़ा गोबर से लिपा-पुता।)

आकाश मे पूनम का चांद। दरवाजे से चाँदनी बीच के कमरे मे आ रही है। खिडकियों में से भी, क्योंकि दो खिड़कियाँ भी हैं। घर मे मिट्टी के तेल का एक टिमटिमाता दिया जल रहा है।

जैसे ही परदा खुलता है गिरधारी दिखाई देता है। गिरधारी ६० वर्षीय एक वृद्ध है जो चिलम पी रहा है। दरवाजे में से धापू जो करीब-करीब गिरधारी जितनी ही वृद्ध है घास का भारा पटक कर आती दिखाई देती है)

धापू : सुबह जलाने के लिए लकड़ी नहीं है।

गिरधारी : सुबह देखेंगे। अभी तो जाने से रहा। (थोडी देर ठहर कर) क्यों धापू– मैंने तुम्हें कहा या नहीं कि रसीद चाचा ने आज तीन सैनिकों को इधर से निकलते देखा था।

धापू : (बैठते हुए) ये सैनिक आखिर यहाँ आते ही क्यो है, मौतपड़ों को यहीं जगह मिलती है। मैं तो उन्हें देखकर कांपने लगती हूँ। कितने भयावह हैं ये लोग !

गिरधारी : हिन्दुस्तानी सैनिकों से घबराने की जरूरत नही।

धापू : मुझे तो सैनिक नाम से घृणा है, क्या– हिन्दुस्तानी, क्या जापानी। मुझे तो समझ में नहीं आता कि आखिर सब काम धंधा छोड़ कर ये लोग क्यो लड़ते-झगड़ते फिरते हैं। यही नही हमारे खेत-खलिहान उजाड़ देते है। रोटी छीन लेते हैं। दूसरों को चैन से नही सोने देते।

गिरधारी : तू नही समझेगी। भूखा तो रोटी छीनेगा ही।

धापू : हम गरीब ही सताने को मिले है इन्हें। यहां तो दो जून रोटी के भी लाले पड़ते है। सुबह से उठते है खेत मे काम करने से फुरसत नहीं मिलती, जब कही काम खत्म होता है तो ये निर्दयी सताने आ जाते है।

गिरधारी : अपने कर्मो का भोग है। किसी को दोष देने से क्या लाभ ?

धापू : हां जी, यह बात तो ठीक है।

गिरधारी : बदूक तो भरी रखी है न? रात-बिरात जरूरत पड़ जाय।

धापू : बंदूक तो तुम्ही ने भरी रखी है। पर बन्दूक भरी मत रखा करो। कुछ ख्याल न रहे तो कुछ-का-कुछ हो जाय।

गिरधारी : अच्छा, चलो, रात बहुत बीत गई है। सोने की तैयारी करो।

घापू : (हँसते हुए) बाहर बिछौना कर दूँ ?

गिरधारी : जब से ये सैनिक आये हैं, बाहर सोना ही छूट गया।

घापू : पर तुम घोरते बहुत हो दिन भर काम और रात मे तुम्हारा घोरना।

गिरधारी : मैं घोरता थोड़े ही हूँ– मैं तो परीक्षा लेता हूँ कि तुम जाग रही हो या सो गई। अभी का वक्त बहुत खराब है– गफलत की नींद नही सोना चाहिए। (गिरधारी अन्दर जाता है और अदृश्य हो जाता है। घापू दिये को बुझा देती है और सांकल लगाती है। एक शान्ति छा जाती है क्योंकि घापू भी अन्दर चली जाती है। चाँदनी रात में खिड़की के रास्ते एक युवक हिन्दुस्तानी सैनिक सावधानी से अन्दर घुसता नजर आता है– उसकी पोशाक जीर्ण-शीर्ण तथा सिर पर एक पट्टी – चेहरे पर खून की धारें स्पष्ट दीख पड़ती हैं यद्यपि वे सूख चुकी हैं। वह घायल एवं भूखा है। अंधेरे मे भोजन ढूंढता है कुछ बड़बड़ाता है इतने में घोड़ों की टापें सुनाई देती है। वह भूसे के कमरे में जल्दी से घुस जाता है। आँगन मे घोड़ों की- घोड़ों तथा आदमियो के स्वर। तुरन्त पश्चात् दरवाजे पर जोर-जोर से दस्तक। न खुलने पर तोड डालते हैं। एक चीनी

सैनिक अधिकारी तथा एक सैनिक अन्दर घुस पड़ते हैं। गिरधारी इस वक्त एक हाथ में चिमनी लिये आ जाता है।)

चीनी अधिकारी : क्या करते दोस्त, तुमने दरवाजा खोलने में इतनी देर कर दी कि हमें इसे तोड़कर आना पड़ा। अच्छा यह बतलाओ इधर कोई सैनिक आया है?

गिरधारी : (डरते हुए) मैंने तो नहीं देखा साब।

अधिकारी : क्या तुम दिन भर से यहीं हो?

गिरधारी : तबियत खराब होने से मैं तो दिन भर से यही हूँ।

अधिकारी : अच्छा तुम्हारे परिवार के सदस्यों को बुलाओ।

गिरधारी : मेरे परिवार में मेरी घर वाली के अलावा कोई नही है।

अधिकारी : उसी को बुलाओ।

गिरधारी : अच्छी बात है साब। (पुकारता है) धापू ओ धापू, जल्दी आना।

अधिकारी : देखो मुझसे झूठ मत बोलना, नहीं तो जानते हो मैं क्या कर सकता हूँ।

गिरधारी : भगवान की सौगन्ध साब। मैंने किसी को नही देखा। (धापू भी काँपती आती है) धापू तुमने भी नहीं......

अधिकारी : चुप रह बुढ़ऊ। मुझे बात करने दे। (धापू से)

बुढ़िया, तू दिन भर से यहीं थी ? (घापू और भी डरने लगती है) क्या मुंह में जबान नहीं है ?

घापू : है।

अधिकारी : तो बोलती क्यों नहीं ? यहां कुछ देर पहिले एक हिन्दुस्तानी सैनिक आया है– घायल है– तुमने उसे देखा है ?

घापू : मैंने किसी·······को नहीं·······देखा।

अधिकारी : बुढ़िया झूठ क्यों बोल रही है ? औरतों की आंखें तेज होती हैं– तूने जरूर देखा होगा। उसके माथे पर घाव था– तूने पानी दिया था। दिया था न ?

घापू : (डरते हुए) नहीं साब– कोई इधर आया ही नहीं।

अधिकारी : देखो, हम उसे नुकसान थोड़े ही पहुंचायेंगे। वह तो हमारा दोस्त है, हम तो उसे अस्पताल ले जाने के लिए ढूंढ़ रहे हैं। क्यों तोजो ? (सैनिक की ओर देखता है)

घापू : यहां कोई नहीं है साब।

अधिकारी : तू क्यों झूठ बोल रही है ?

घापू : मैं झूठ कहां बोल रही हूं ? जब मैंने किसी को देखा ही नहीं तो कैसे कह दूं कि देखा।

अधिकारी : देख बुढ़िया– और बुड्ढे तू भी सुन ले, यदि मैंने उसे यहीं से ढूंढ़ निकाला तो तुम्हारी

और कौन गया ?

तोजो : (धापू को थप्पड़ मारता है) चुप खूसट। सरकार के सामने बोलती है।

अधिकारी : (कुछ सोचते हुए) वह हमसे अधिक आगे नहीं था और घायल भी हो गया था। रास्ते में उस किसान ने भी तो कहा था कि घोड़े की टापें सुनी थीं और यह कहता है न कुछ देखा न सुना। (रिवाल्वर निकालता है और गिरधारी के सीने मे अड़ा देता है) बातें उगलवाना मैं जानता हूँ। बोल मरदूद, अब भी सच-सच बतायेगा या नहीं ?

गिरधारी : (गिड़गिड़ाते हुए) तुम्हारे पैरों की कसम मालिक। मैंने किसी आदमी को नही देखा— न कोई आहट सुनी। यदि मुझे उसका पता होता तो इतनी देर करता! उसी वक्त तुम्हें बता देता।

अधिकारी : तुम बताओगे तो सही। तुम नही बताओगे तो तुम्हारी छाया बताएगी। (रिवाल्वर हटा लेता है) नहीं तुम दोनों को मैं फौज के हवाले कर दूँगा और कुत्तों की मौत मारूंगा। (धापू की ओर मुखातिब होकर) बुढ़िया, तुझे तो पता है ही।

धापू : (खीजती हुई) हां पता है मुझे— नही बताती

दे दो मुझे फौज को– मरवा डालो (रोती हुई) कह दिया कि नहीं मालूम। सारा घर छान डाला फिर भी विश्वास नहीं होता।

अधिकारी : अच्छा बुड्ढी चिल्ला मत– जल्दी कुछ चावल पका दे। भूख जोर की लगी है। तोजो, जरा घोड़ों को पानी दे दो। लगता है कि वह जवान इधर नही है और यदि हुआ भी तो हम ढूंढ़ निकालेंगे। (गिरधारी से) तोजो को जानवरों को पानी पिलाने का बर्तन दे दो।

धापू : पानी पिलाने का बर्तन नही है।

अधिकारी : नही है– तो वह तपेला दे दो।

धापू : उसमें तो हमारे पीने का पानी रखा जाता है।

अधिकारी : ठीक है– दे दो– तुममें और जानवरों में फर्क ही क्या है? (तोजो और गिरधारी बर्तन लेकर जाते हैं)

धापू : लकड़ी भी तो नही है– कण्डे लाती हूँ। (कण्डे लेने बाहर जाती है वहीं हिन्दुस्तानी दिखाई देता है। धापू का स्वर सहानुभूतिपूर्ण नही है) जान प्यारी है तो भाग जा। वे देख लेंगे तो हमारी सब की जान ले लेंगे, तुम यहाँ आकर मरे ही क्यों?

हिन्दुस्तानी : माँजी क्या करता– बुरी तरह थक गया था–

और वे लोग बड़ी दूर से पीछा कर रहे थे। थोड़ा पानी।

धापू : उनको चला जाने दे। फिर पानी का नाम लेना, अच्छा यह बता कि तुमने क्या चुराया है ?

हिन्दुस्तानी : चुराया ?

धापू : चुराया नहीं तो भागते क्यों हो ? साहूकार हो तो इस तरह क्यों छिप रहे हो ?

हिन्दुस्तानी : तुम नहीं समझोगी माँजी। वे चीनी हमारे दुश्मन हैं। मेरे पास एक बहुत जरूरी नक्शा है, उसी के लिए वे पीछा कर रहे है। यदि यह नक्शा उनके पंजे पड़ गया तो हमारा सत्यानाश हो जायेगा।

धापू : इतने से कागज के टुकड़े के लिए यह मारा-मारी।

हिन्दुस्तानी : माँजी किसी तरह मुझे इनके चंगुल से बचा लोगी तो देश का बड़ा उपकार करोगी—सरकार तुम्हें बहुत बड़ा इनाम देगी।

धापू : देश-वेश मैं नहीं जानती। ईनाम-विनाम भी नही चाहिए। मैं तो इतना चाहती हूँ कि तुम हमें अपनी मजदूरी करने दो और दो रोटी कमाने दो।

हिन्दुस्तानी : देखो हजारों सैनिकों के प्राण आज तुम्हारी

दया की भीख मांगते हैं ।

धापू : दया? मुझ पर आज तक किसने दया दिखाई है– जो आज मैं दया करूं, यदि एक टैम काम नहीं करें तो भूखों मर जांय । तुम तो बाबा किसी प्रकार यहां से टलो। चैन से सोने दो बस।

हिन्दुस्तानी : कैसे जाऊं ? वे जो मेरा पीछा कर रहे हैं। गोलियों से भून देंगे ।

धापू : तो क्या तेरी इच्छा हमें भुनाने की है ?

हिन्दुस्तानी : (रिवाल्वर निकालकर) देख बुढ़िया– किसी तरह नहीं मानती तो यूं ले। मेरा पता बताया तो जिन्दा नहीं छोड़ूंगा ।

धापू : बाप रे बाप !

हिन्दुस्तानी : समझ गई न ?

धापू : क्यों तुम लोग हैरान कर रहे हो। हे भगवान किस पाप का प्रायश्चित्त कर रही हूं। मैं तुम लोगों से क्या मांग रही हूं जो इस तरह से धमका और डरा रहे हो ? क्यों मेरे घर से तुम लोगों को जो मेरी शान्ति भंग कर रहे हैं– मुझे तुम्हें भगाने का भी अधिकार नहीं । तुम लोगों के पास हथियार हैं तो क्या निहत्थों को मारने और काटने के लिए है ? मैं तो जाती हूं ।

हिन्दुस्तानी : मेरी बात का ख्याल रखना।

(धापू रसोई घर से आती है)

अधिकारी : क्यो तुमने इतनी देर क्यों लगा दी ?

धापू : कण्डे बीन रही थी। लकड़ी तो है ही नहीं ?

अधिकारी : चल अब जल्दी कर। जब से हम आये हैं आधा घण्टा हो गया। इस समय में तुम १० वक्त भोजन बना सकती थी। क्या करती है ?

धापू : जो कुछ करती रही, तुम जानते ही हो।

अधिकारी : ओ निठल्ली औरत चुप रह और जल्दी चावल पका।

(तोजो और गिरधारी आ जाते हैं)

तोजो : सरदार, इन लोगों ने तो दिमाग ही नहीं, पेट को भी और खाली कर दिया।

(गिरधारी भी सूखती हुई धोती से लेकर बन्दूक साफ करता है)

धापू : धोती मत बिगाड़ो।

तोजो : चुप रह।

अधिकारी : झटपट खाना पका। बात मत कर। तोजो, आखिर वह भला कहाँ गया ?

तोजो : सरदार वह तो जानता था कि हम पीछा कर रहे हैं। उसने झाँसा देने के लिए घोड़ा यही छोड़ दिया और पैरन्पैर रफू चक्कर हो गया।

गिरधारी : आप लोग बहुत थक गये हैं।

अधिकारी : दिख नहीं रहा है बुढ़ऊ, कितने दूर से आ

रहे हैं।

गिरधारी : कितने दूर से आ रहे हैं ?

अधिकारी : चुप रह। पूछे ही जायेगा। क्या करना तुझे ?

(धापू– चावल और छाछ परोसती है)

धापू : लो, अब तो शांति हुई।

अधिकारी : इतने से क्या होगा ? और ला।

धापू : मगर अब तो घर में कुछ नहीं है।

तोजो : (गरजकर) नहीं है ? नहीं कैसे है ? (चांटा मारने की आवाज) बुढ़िया हमको बनाती है।

धापू : (रोते हुए) राक्षस मारता क्यों है ?

तोजो : तो तेरी पूजा करूं। आदमी का पता नहीं बताती, भरपेट खाना नहीं देती और सामने-मुहजोरी करती है।

अधिकारी : (चिल्लाकर) चल नमक लाकर दे।

धापू : (रोते-रोते) लाती हूँ। (नमक लाकर देती है)

तोजो : सरदार नमक में काला-काला क्या है ?

अधिकारी : क्यों बुढ़िया नमक में जहर तो नहीं मिलाया ?

धापू : (क्रोध से) जहर ? मौतपड़ो तुम मुझे डायन समझते हो क्या ? मुझे क्यों परेशान कर रहे हो चार घण्टों से। पागल बना दिया है तुमने।

(दीवाल पर टँगी बन्दूक उठाकर दागने की कोशिश करती है)

गिरधारी : (चिल्लाते हुए) अरी क्या करती है

(धापू चीनी अधिकारी को गोली मार देती है। तोजो बन्दूक उठाने की कोशिश करता है, मगर धापू उसे भी गोली मार देती है। हिन्दुस्तानी सैनिक आवाज सुनकर आ जाता है)

हिन्दुस्तानी : वाह ! मांजी बहुत खूब ! तुमने तो वह काम कर दिखाया जो बहादुर से बहादुर सैनिक नहीं कर पाते।

धापू : हाय राम, यह मैंने क्या कर डाला !

हिन्दुस्तानी : घबराओ मत मांजी अब तुमको परमवीर चक्र से कम सम्मान नहीं मिल सकता। तुमने आज देश को एक बड़े भारी खतरे से बचा लिया है। अच्छा मैं चला, जल्द ही तुम्हारे पास संदेश भिजवाऊंगा। जयहिन्द।

(घोड़े पर बैठकर सपाटे से चल निकलता है। धापू और गिरधारी भौचक्के से देखते रह जाते हैं।)

गुड विशेज

पात्र

पति,
पत्नी,
मुन्ना,
आगन्तुक।

पति : मैंने हजारों वक्त कहा है कि आते से ही घर में महाभारत न चला दिया करो।

पत्नी : अच्छा जी मैं तो महाभारत मचाती हूँ, क्यों ?

पति : और क्या, आते से ही झगड़ा, महाभारत नही ग्रेटवार कहो, इसे।

पत्नी : मैं कहती हूँ कि यदि शाक-भाजी के लिए तुम्हे नहीं कहूँ तो किसे कहूँ ? कोई मिठाई तो माँगती नहीं। बार त्योहार के दिन शाक-भाजी नही ?

पति : क्या तुम्हारे लिए चोरी करके लाऊं ?

पत्नी : दिन भर क्या खाक छानते फिरते हो ?

पति : तुमको क्या मालूम दिन भर खाक छानने पर भी दमड़ी हाथ नहीं आती।

पत्नी : यदि यही हाल थे तो शादी करने को क्यों मरे जा रहे थे, क्या जरूरत थी शादी-व्याह की ? अभी तो कोई ज्यादह लड़के-लड़की भी नहीं, तभी यह हाल है। एक मुन्ना भर है।

पति : शादी क्यों की ? यह भी कोई सवाल है ? पूछना अपने बाप से वही हमारे घर बार-बार

चक्कर लगाता था।

पत्नी : अरे क्यों झूठ बोलते हो? तुम्हारे बाप ने ही नाक रगड़ी थी। सदेश पर सदेश भेजे थे।

पति : देखो, मेरे बाप तक मत जाओ, कहे देता हूँ।

पत्नी : तो तुम भी अपने मुँह को बन्द रखो। जैसा कहोगे, वैसा सुनोगे।

पति : मुझमें किस बात की कमी है। पढ़ा-लिखा हूँ, जवान हूँ, मगर सिफारिश नहीं है इसीलिए जगह-जगह भटकने पर भी काम नही मिलता। बिजनेस किया उसमें भी यही हाल।

पत्नी : हां ठीक कहते हो जी! मेरी मौसी का लड़का कोई खास पढ़ा-लिखा भी नहीं है, उसे क्या ठाट की आफीसरी मिल गई। मोज करता है और एक तुम हो इतने पढ़े-लिखे फिर भी बेकार।

पति : भगवान चाहेगा तो सब कुछ ठीक हो जावेगा, आज नहीं तो कल। पर तुम बेकल मत हुआ करो, वक्त पर जो मिल जावे खा-पी लिया करो। मेंढक की तरह यह टर्र-टर्र बुरी है।

पत्नी : अच्छा जी मैं मेंढक हूँ तो तुम कौन हो...... आज मेरे पीहर से चिट्ठी आई है। वहां शशि की शादी है।

पति : शशि, कौन शशि?

पत्नी : लो, अब शशि को भी भूलने लगे? मेरी छोटी

बहिन, और कौन ?

पति : क्या खबर सुनाई है, उसकी शादी की अभी क्या जल्दी थी। वाहरे भगवान एक साली कुवांरी रही तब तक बेचारी ससुराल में खातिर तवज्जू करती रही, अब तो सब मखन्नुस लोग रह जावेंगे।

पत्नी : मखन्नुस ? क्या तुम्हें जिन्दगी भर खिलाते रहें ? उनके बाल-बच्चे नहीं हैं क्या ?

पति : कौन बड़े बाल-बच्चे हैं उनके ? ले देके दो लड़कियां ही तो हैं ! भगवान का दिया बहुत है, और फिर अपने शास्त्रों में तो लिखा है कि दामाद को दिया द्रव्य अनेक गुना होकर स्वर्ग में मिलता है। अपने कर्म-कांडी पिता को इतना जरा समझा दो तो दरिद्रता दूर हो जावे।

पत्नी : धन है तो क्या बांटने के लिए ? आज-कल कौन किसी के काम आता है फिर बुढ़ापा है कुछ आधार तो चाहिए।

पति : यहां तो हम जवानी में ही निराधार हो रहे हैं, बुढ़ापा तो बुढ़ापा है आधार और बिना आधार सब एक जैसा ही है। (मुन्ने का प्रवेश)

मुन्ना : पापा मेरे मास्टर साहेब कह रहे थे कि मैं बहुत कमजोर हूँ ट्यूशन बिना पास नहीं हो सकता।

पति : फेल तो हो सकता है ? फेल ही हो जाना, क्या

करेगा जल्दी पढ़ लिखकर। पढ़े-लिखे बेकारों की सख्या बढ़ावेगा, और सरकारी योजना को असफल बनावेगा।

पत्नी : कैसी बातें करते हो? ट्यूशन तो जरूर लगा दो। एक वक्त कम खाना, पर पढ़ाई मे कसर न करना चाहिए।

पति : खाने में तो रोज कसर हो रही है, और याद रखो बेकारों के लड़के ट्यूशनों पर नही पढ़ते, सरकारी स्कूल में पढ़ने वाले बच्चे को ट्यूशन की जरूरत ही क्या? मूर्ख है तुम्हारा लड़का, और मूर्ख की ट्यूशन लगाओ या नही, क्या फर्क पड़ने वाला है, गधे कभी घोड़े हुए हैं?

पत्नी : मेरे बच्चे को गधा मत कहो, गधा होगा मास्टर, उसके सिर पर ६०–६० लड़कों का भार लाद दिया जाता है, तुम नहीं सुनोगे तो मैं अपना इन्तजाम कर लूंगी, मुझे ऐसी-वैसी मत समझना।

पति : तुम्हें ऐसी-वैसी समझे उसकी ऐसी-तैसी, तुम कर लो इन्तजाम। अपने बस का यह रोग नही।

पत्नी : खैर, ट्यूशन वगैरा तो होती रहेगी, यह बतलाओ कि शशि की शादी में दहेज के लिए क्या कर रहे हो।

पति : अपने आप को रख सकता हूँ।

पत्नी : हां-हां, अपने आपको जरूर रखोगे, पर मैं रखने दू̐ तब ना। मेरी एक ही तो बहिन है, शादी के सात साल बाद ऐसा मौका आया है, कुछ तो करना ही होगा।

पति : ठीक है, गुड विशेज पहुँचा देंगे।

पत्नी : गुड विशेज को क्या चाटेगी वह ? अपनी बहिन के लिए रख लो उसी को दे देना।

पति : अच्छा कोई चाटने की चीज पहुँचा देंगे।

पत्नी : देखो, अब मजाकबाजी बहुत हो चुकी।

पति : तुम इसे मजाक समझती हो ? मैं तो सच ही कह रहा हू̐। बेकार आदमी और भेज ही क्या सकता हू̐। बताओ कैसा इन्तजाम किया जावे, अपनी तो अकल ही काम नहीं देती और किसी से सलाह लेने की आजकल फीस लगती है।

पत्नी : तो लो मैं तुम्हें लाख रुपये की सलाह मुफ्त में देती हू̐, सोनी जी से उधार क्यों नहीं ले लेते ?

पति : पाँच रुपया प्रति सैकड़ा प्रति माह व्याज की दर है उसकी, समझी कुछ।

पत्नी : कुछ भी हो, काम तो चल जावेगा, वक्त पर पैसे को नहीं देखा जाता।

पति : फिर, वह देने वाला भी नहीं है, उसके सौ रुपये १००) एक साल से मैं दे नहीं पाया, कल ही तो उसने वकील के मार्फत नोटिस भिजवाया है।

पत्नी　: तो फिर कहीं और से लाओ, कैसे मर्द हो जरा-सा रुपया कर्ज में भी नहीं ला सकते ।

पति　: जी हां, मैं ऐसा ही मर्द हूं कहिये ? तुम ऐसे बात करती हो मानो मेरी कोई बैंक जैसी साख है । काम-काज से लगा होता तो दो पैसे मिल भी जाते, मगर बेकारों को भगवान भी उधार नहीं देता ।

पत्नी　: बेकारों को नहीं आलसियों को । आखिर दुनियां में इतने लोग हैं । सबका काम चलता ही है । यदि तुम कर्ज भी नहीं ले सकते तो और कुछ न कुछ तो कर सकते हो ।

पति　: क्या मतलब ?

पत्नी　: चोरी करो, डाका डालो, चार सौ बीसी करो । यदि तुम सीधे-सादे बनकर दुनिया में सूखी रोटी भी नहीं पा सकते हो, तो किसी और तरीके से उसे हासिल करो, तुम पढ़े-लिखे हो पर रहे निरे बुद्धू ।

पति　: बुद्धू हूं ? अक्कल का जहां तक ताल्लुक है, मैं किसी से कम नहीं । सार्टीफिकेट तो तुम्हारे पास ही है, सरकार भी इन्हें मानती है ।

पत्नी　: रहने दो, इन कागजी सार्टीफिकेटों का क्या महत्व ? तुम से तो वह गेन्दू ही अच्छा है । तुम्हारे गांव से ही आया था, और तुम्हारे भी

बाद। पढ़ना-लिखना उसके बाप ने नहीं जाना। घर का गरीब मगर आज तुम्हारे शहर में आलीशान मकान खड़ा करके रह रहा है।

पति : अपनी-अपनी तकदीर।

पत्नी : तकदीर-तकदीर, तकदीर क्या खाक है? तदबीर की बात करो।

पति : (कुछ सोच कर) अच्छी बात है तुम्हें रुपया चाहिए ना?

पत्नी : जी हाँ, कितनी बार पूछोगे?

पति : किसी भी तरह?

पत्नी : किसी भी तरह।

पति : तो देखो बन्दे की अक्ल का कमाल।

पत्नी : तो घर लिख दूं कि हम शीघ्र आ रहे है?

पति : हाँ-हाँ किसी को ही लिख दो, और उस पर यह भी स्पष्ट कर देना कि मैंने एक बड़ा रोजगार खोल दिया है, जिसमें लाभ ही लाभ है, यह भी जोड़ देना कि तुम्हारे लिए एक बढ़िया-सा नेकलेस, एक बढ़िया-सी साड़ी वगैरा-वगैरा चीजें लेकर हम आ रहे हैं, तारीख का इन्तजार करो।

पत्नी : तुम कितने अच्छे हो। (संगीत)

पति : अब भी मानती हो या नहीं।

पत्नी : (चुहलबाजी से) यही ना कि तुम्हारे दिमाग में अक्कल कम है।

पति : (जरा नाराजी से) फिर वही बात ।

पत्नी : अच्छा-अच्छा, तुम्हीं बतलाओ, क्या मान लूं ?

पति : यही कि बन्दे के दिमाग में अक्कल का समुन्दर लहरा रहा है । वह नुकसा निकाला है, कि रुपयों की बाढ़ आ जावेगी, समझ लो तुम्हारी गरीबी के दिन हवा हो गये ।

पत्नी : मानती हूँ, साहेब ।

पति : अजी-अभी क्या मानती हो उस वक्त और भी मानोगी जब विज्ञापन पढ़ कर ही लोगो की भीड़ इस दरवाजे को घेर लेगी ।

पत्नी : दरवाजे को घेर लेगी ?

पति : मेरा मतलव है, कंठों के लिए लोग टूट पड़ेंगे ।

पत्नी : यह तो मैं पहले से ही जानती थी कि तुम हुनर वाले हो, सोलह किताबें पढ़ी है ।

पति : किताबें तो वहुत पढ़ी, तुम्हारा मतलव सोलह कक्षा से है, हैना ।

पत्नी : हाँ, ऊट-पटांग लोग खाते कमाते और गुल-छर्रे उड़ाते नजर आते हैं । तुम यह सब क्यों नहीं कर सकते, दरअसल तुम्हारी दिलचस्पी ही इस तरफ नही थी, नौकरी के पीछे मजनू हो रहे थे, पर लक्ष्मी तो व्यापार में बसती है ।

पति : तुम्हारी बात सही हो सकती है, यदि व्यापार मेरे जैसा हो ।

पत्नी : पर बिना योग के कुछ नहीं होता।

पति : योग की बात तो तुम जैसा योगी ही जाने।

पत्नी : अच्छा, एक बात पूछूं ?

पति : एक नहीं हजार पूछो।

पत्नी : अच्छा यह तो बतलाओ कि हम लोगो को फायदा कितना होगा ?

पति : तुमने तो बहुत बड़ी बात पूछ ली। पर तुम तो मेरी धर्म-पत्नी ठहरी, अर्धांगिनी और इस धन्धे की प्रेरणा स्रोत। तुम से क्या छिपाना ? सुनो *(धीमी आवाज मे) एक हीरे की कीमत एक* हजार रुपया है इसमें से १५ प्रतिशत अपना और बाकी का कपनी का, क्योंकि उसने क्रेडिट पर यह दस हीरों का हार दिया है।

पत्नी : एक हीरे की कीमत एक हजार रुपया ? बाप रे बाप, अपने को एक हजार पर कितने मिलेंगे ?

पति : हीरों की कीमत और भी ज्यादा होती है, हम तो सस्ते ही भाव में बेच रहे है। बताया नही २५ प्रतिशत याने २५० रुपये।

पत्नी : एक हीरे पर २५० रुपये और दस पर……… ?

पति : जोड़ ले पूरे २५००) ढाई हजार रुपया।

पत्नी : वाह रे भगवान एक ही धंधे में ढाई हजार !

पति : इतने में ही गश खाने लगीं ? आगे-आगे देखिये होता है क्या। तुम ही तो कहा करती थी, कि

अक्ल हो तो पैसों की क्या कमी ? (धीरे से) ऐसी चतुरता से विज्ञापन बनाया है, कि एक ही कंठे पर हजारों का फायदा (अखबार पढ़ते हुए) लो इसे पढ़ो।

पत्नी : (पढ़ती है) दस हीरों का अद्वितीय कंठा प्रत्येक हीरा प्रकाश का अटूट कोष अंधेरे में रख दो तो बिजली की आवश्यता नहीं, एक का दाम दस हजार रुपये।

पति : आया कुछ आपके दिमाग में ?

पत्नी : उसमें क्या है ? प्रत्येक कंठे की कीमत एक हजार रुपया है।

पति : इसी को समझना कहती हो ?

पत्नी : और नहीं तो क्या ?

पति : समझने के लिए वकीली दिमाग चाहिए, पर वह भी ऐसे-वैसे वकील का नहीं, सुप्रीम कोर्ट के वकील का।

पत्नी : (उत्सुकता से) अब बताओगे भी ?

पति : मानली हार ?

पत्नी : यही समझो।

पति : गौर से सुनो, हरेक हीरे की कीमत है एक हजार और एक कंठे को कीमत है १० हजार।

पत्नी : बाप रे (खुशी से) अम्मी समझती है कि वही मकान वाली है, मैं एक साल में ही ऐसा मकान

खड़ा करूंगी कि उसके बाप ने सपने मे भी नही देखा होगा, एक से एक बढ़िया चीजें लगाऊंगी, साड़ियाँ...... ......

(दरवाजे पर दस्तक की आवाज)

पति : लो कोई खरीदार आ गया। उस कुर्सी को सलीके से रख दो। टेबल पर बिस्तर की चादर बिछा दो, और वह फ्लावर पाट भी ले आओ, बासी फूल भी चलेंगे। कह दूंगा आज साला माली बिन कहे ही लापता हो गया। (फिर दस्तक) अरी ओ भगवान वह हार कहाँ रख दिया? मिल गया, मिल गया। जाओ दरवाजा खोल दो। (दरवाजा खुलने का शब्द)

आगन्तुक : जय हिन्द।

पति : जय हिन्द।

आगन्तुक : आपका विज्ञापन स्थानीय हिन्द समाचार में पढ़ा है, इसीलिए आया हूँ।

पति : मैं आप ही का इन्तजार कर रहा था। देखिए यह रहा कंठा।

आगन्तुक : ठीक, बहुत ठीक, मैं किस मुंह से आपकी तारीफ करूं वरना साहब आजकल के जमाने में भरे बाजार से हाथी खो जावे तो पता न चले, यह तो कंठा है। उसमें आपका एहसानमन्द हूँ।

(पति, पत्नी आश्चर्य से) जी?

आगन्तुक : यह कंठा मेरी माता जी ने मेरी पत्नी के लिए दिया था। खो गया था। आप जानते हैं, आजकल की औरतें कितनी फूहड़ होती हैं। आपने हमें बचा लिया।

पति : आप गलत समझ रहे हैं, यह कंठा वह नहीं है जिसकी आपको तलाश है।

आगन्तुक : मेरी चीज और मैं ही नहीं पहचानूं। कैसी बात आप कह रहे हैं?

पति : साहब मैंने कलदार देकर कंठे को खरीदा है, मैंने इसे बेचने के लिए विज्ञापन दिया था, लौटाने के लिए नहीं, कुछ समझे आप?

आगन्तुक : देखिये, इतना बड़ा झूठ मत बोलिए। विज्ञापन अखबार में लास्ट ऐन्ड फाउन्ड कालम के अन्तर्गत छापा गया है।

पति : यह अखबार वाले की गलती है। मैं उसकी बारह बजा दूंगा।

आगन्तुक : आप बारह छोड़ तेरह बजावें, मेरी बला से। मगर यह कंठा मेरा है, मैं ले जाता हूँ।

पत्नी : यह अच्छी जबरदस्ती है।

आगन्तुक : जबरदस्ती तो आप लोगों की है, दूसरों के माल पर धन्धा करने की सोचते हैं। शर्म नहीं आती। अभी पुलिस को खबर कर दूं तो आटे-दाल का भाव समझ में आ जावेगा।

पति : देखिये, मुझे डराइये मत, इस धमकी से मैं डरने वाला नहीं।

पत्नी : इन्होंने भी इंडियन पेनल कोड पढ़ा है, समझे।

आगन्तुक : तब तो आप लोग जानते हुए अपराध कर रहे हैं। अपराध और भी संगीन है।

पति : आपको जो कुछ भी करना है, कीजिये। कंठा दे जाइए।

आगन्तुक : कंठा तो मैं किसी हालत में आपको नहीं लौटा सकता। मेरी शराफत कि पुलिस को खबर नहीं कर रहा हूँ। यदि जोर-जबरदस्ती की तो यह पिस्तौल देखो।

(जाने का जोर से शब्द)

पत्नी : अब क्या होगा जी ?

पति : भगवान जाने।

पत्नी : शादी में कैसे जाओगे ?

पति : मुकद्दर का चक्कर तो तुम देख रही ही हो। यह तो अच्छा हुआ कि हार नकली था, नहीं तो और हमें कंपनी वालों को अधिक रुपया देना पड़ता। नुकसान की चिन्ता मत करो। हम कंपनी से दूसरा हार ले आवेंगे। और धंधे में नफा नुकसान तो चलता ही है।

पत्नी : वाह, भगवान ने हमें कुछ तो बचा लिया। तार कर दो कि हम नहीं आ सकते।

पति : नहीं, ऐसे ठीक नहीं रहेगा। तार में लिख देते हैं शादी में शरीक होने में असमर्थ हैं। पत्र भेजा जा रहा है। वर वधू को गुड विशेज याने शुभ कामनायें। पत्र में चोरी की बात विशेष वर्णन के साथ लिख दूंगा।

पत्नी : हां-हां, यही ठीक रहेगा। दूसरा रास्ता ही क्या है ?

पति : (गुमगुनाते) यदि पहले ही मान लेती तो यह कबाड़ा तो नहीं करना पड़ता।

पत्नी : क्या कहा ?

पति : कुछ तो नहीं। मैं दुहरा रहा था। गुड विशेज टू द कपल।



बँटवारा

पात्र-परिचय

रेणुका राय वत्सला बेनर्जी	:	बहिनें
श्रीयुत राय श्रीयुत बेनर्जी		उनके पति
राजू	:	रेणुका तथा राय का ९ वर्षीय बालक।
निरंजन	:	साठ वर्षीय पुरुष जो रेणुका तथा वत्सला का पिता है।

शयन कक्ष में एक ड्रेसिंग टेबल है यह तो तुम जानते ही हो। ऐसी टेबल के लिए तो मैं बहुत दिनों से तरस रही थी।

राय : वत्सला के आने पर बँटवारे में वह टेबल ले लेना।

रेणुका : तुमने भी एक ही कही। वह चुड़ैल ऐसी चीज कभी लेने भी देगी। कितनी स्वार्थी वृत्ति है, उसका तुम्हें पता नहीं।

राय : यदि यह बात है तो वह टेबल न मिलने पर हंगामा खड़ा कर सकती है।

रेणुका : जब से पिता जी ने इसे खरीदा है, वह आई ही कहां है? उस टेबल को हम ऊपर से नीचे ले आयें तो समझो काम हो गया। उसे शका का कारण ही नहीं रहेगा।

राय : भई, यह अपने बस का रोग नहीं है।

रेणुका : तुम भी रहे बुद्धू के बुद्धू। क्यों नहीं ला सके उसे? अपने पास की टेबल ऊपर रख आते हैं। वत्सला यह ले लेगी। यह टेबल तो मुझे सुहाती भी नहीं। इस अटाले को तो मैं फकना ही चाहती थी। कितनी बेढब है।

राय : इस अदला-बदली के दौरान ही वे लोग आ गये तो?

रेणुका : दरवाजा अन्दर से बन्द कर लेते हैं। क्या तोड़

कर घुसेंगे ? तुम्हारी कमीज झटपट निकाल लो। अभी बदले लेते हैं। (दरवाजा तथा खिड़की बन्द करने की आवाज) देखो मैं ऊपर जाती हूँ और रास्ते की चीजें हटा देती हूँ।……… क्यों रे तू आ गया ?

राजू : हाँ अम्मा। मगर बटन नहीं लगती। लगा दो न।

रेणुका : नही लगती तो न लगने दे। मुझे फुरसत नहीं। ठहरना जी, मैं अभी आई।

राजू : पापा तुम लगा दो।

राय : जरा ठहर।

रेणुका : (दूर से, खिटकते हुए) तुमको इतनी भी समझ नही कि देर हो रही है। बटन के चक्कर में वक्त बरबाद करना चाहते हो।

राय : हिष्ट । ऐसा नहीं कहते । वह देख तेरी अम्मा आ गई ।

रेणुका : मैंने सोचा इसे भी ले चलूं । हमारे पास ठंड में ओढ़ने को साल तक न थी । (बक्स में रखने का शब्द)

राजू : यह तो नाना की शाल है, अम्मा ।

रेणुका : चुप, अब यह हमारी है ।...... ... टेबल को हाथ लगाओ जी ।......... और राजू, देख मौसी को टेबल और शाल के बाबत कुछ भी कहा तो तेरी खैर नहीं ।

(टेबल को उठाने तथा उठाने मे जोर लगाने का शब्द)

(थोड़ी देर बाद दरवाजे पर जोर की दस्तक)

रेणुका : (ऊपर से आते शब्द) राजू मौसी मौसा आये हों तो दरवाजा मत खोलना ।

राजू : अम्मा वे ही हैं ।

रेणुका : जब तक मैं नीचे न आ जाऊं, दरवाजा मत खोलना । (फिर दस्तक) खटखटाने दे । (दीवाल से टेबल टकराने का शब्द) दीवाल से तो बचाओ । (टेबल रखने का तथा हांफने का शब्द) अब ठीक है ।......... मैं कैसी दिखाई देती हूँ ?

राय : ड्रेसिंग टेबल से ही पूछो ।......... पर सुनो दीवार से अधिक प्लास्टर तो नहीं गिरा ?

रेणुका : होगा जी । वत्सला के सामने हमें ऐसा दरसाना

कर घुसेंगे ? तुम्हारी कमीज झटपट निकाल लो। अभी बदले लेते हैं। (दरवाजा तथा खिड़की बन्द करने की आवाज) देखो मैं ऊपर जाती हूँ और रास्ते की चीजें हटा देती हूँ।......... क्यों रे तू आ गया ?

राजू : हां अम्मा। मगर बटन नहीं लगती। लगा दो न।

रेणुका : नहीं लगती तो न लगने दे। मुझे फुरसत नहीं। ठहरना जी, मैं अभी आई।

राजू : पापा तुम लगा दो।

राय : जरा ठहर।

रेणुका : (दूर से, झिटकते हुए) तुमको इतनी भी समझ नहीं कि देर हो रही है। बटन के चक्कर में वक्त बरबाद करना चाहते हो।

राजू : पापा, तुमने कमीज को क्यों निकाल दिया ?

राय : तेरी अम्मा और मैं ऊपर का ड्रेसिंग टेबल यहां लायेंगे।

राजू : (तनिक सोचकर) अच्छा इसलिए कि मौसी को पता न लग सके।

राय : (चौंककर) नहीं रे राजू। तुम्हारे नाना ने मरने के पहिले इसे तुम्हारी अम्मा को दे दिया था।

राजू : कब ? आज सुबह ?

राय : हां।

राजू : सुबह तो वह अफीम खाकर पड़े थे।

राय : हिष्ट । ऐसा नहीं कहते । वह देख तेरी अम्मा आ गई ।

रेणुका : मैंने सोचा इसे भी ले चलूँ । हमारे पास ठंड में ओढ़ने को साल तक न थी । (बक्स मे रखने का शब्द)

राजू : यह तो नाना की शाल है, अम्मा ।

रेणुका : चुप, अब यह हमारी है ।…… … टेबल को हाथ लगाओ जी ।……… और राजू, देख मौसी को टेबल और शाल के बाबत कुछ भी कहा तो तेरी खैर नहीं ।

(टेबल को उठाने तथा उठाने मे जोर लगाने का शब्द)

(थोड़ी देर बाद दरवाजे पर जोर की दस्तक)

रेणुका : (ऊपर से आते शब्द) राजू मौसी मौसा आये हों तो दरवाजा मत खोलना ।

राजू : अम्मा वे ही हैं ।

रेणुका : जब तक मैं नीचे न आ जाऊं, दरवाजा मत खोलना । (फिर दस्तक) खटखटाने दे । (दीवाल से टेबल टकराने का शब्द) दीवाल से तो बचाओ । (टेबल रखने का तथा हांफने का शब्द) अब ठीक है ।……… मैं कैसी दिखाई देती हूँ ?

राय : ड्रेसिंग टेबल से ही पूछो ।……… पर सुनो दीवार से अधिक प्लास्टर तो नहीं गिरा ?

रेणुका : होगा जी । वत्सला के सामने हमें ऐसा दरसाना

है कि हम बड़ी देरी से उनका इन्तजार कर रहे थे। राजू जा, दरवाजा खोल दे।

(दरवाजा खोलने तथा दो व्यक्तियों के आने का शब्द)

रेणुका : (रोते हुए) हम लोग लुट गये, अनाथ हो गये, वत्सला।

वत्सला : (रोते हुए) हाय पापा।

रेणुका : (रोते-रोते) हमें रोता छोड़कर चले गये वह बहिन।

बेनर्जी : रेणुकाजी आप इतनी दुखी न होइए। इस संसार में जो भी आता है जरूर जाता है। आप तो पढ़ी-लिखी है, समझदार हैं। याद कीजिये गीता को जो कहती है– जातस्य हि ध्रुवामृत्युः। फिर रोने-धोने से लाभ ? भगवान को धन्यवाद दो कि पिता जी पर ही मौत की बिजली गिरी। वे तो बूढ़े थे, तर गये।............ कहीं हम लोगों में से............

वत्सला : हां, ठीक ही कहते हैं विनोद के बाबूजी कहीं, हम लोगों में से किसी पर यह वज्र टूटता तो............।

राय : वत्सला जी आपको आने में काफी वक्त लग गया ?

वत्सला : ये बाहर गये थे, जब आये तब आना हुआ। मोहन की तबियत भी ठीक नही है......... उसे

तो घर पर ही छोड़कर आना पड़ा।

रेणुका : क्यों, क्या हो गया उसे ?

बेनर्जी : कोई खास बात नहीं है।

वत्सला : ये लो, कहते हैं कोई खास बात नही है। माँ के दर्द को मर्द क्या समझे।

बेनर्जी : पिताजी को अकस्मात क्या हो गया था, रेणुकाजी ?

वत्सला : हाँ बहिन, पापा को क्या हो गया था ? डाक्टर ने तो कुछ बतलाया ही होगा ?

रेणुका : बस कुछ मत पूछो। डाक्टर को बुलाते-बुलाते ही वह चल बसे।

वत्सला : तो डाक्टर को नही बुलाया ?

बेनर्जी : डाक्टर को तो जरूर बुलाना चाहिए था।

रेणुका : आप लोग क्या मुझे मूर्ख समझते हैं ? मैंने राजू के पापा को उसी वक्त डाक्टर बिलग्रामी को बुलाने के लिए भेजा था। मगर आजकल मरीजो का कुछ न पूछो। वह भला आदमी घर पर मिला भी नहीं। उसके कम्पाउन्डर ने बतलाया कि वह तीन-चार घंटे से पहिले लौटने वाला नहीं।

बेनर्जी : तो दूसरा ढूंढ़ लेते। आजकल डाक्टरों की संख्या बीमारियों से कम नहीं।

वत्सला : वाकई, तुम्हारी इसी गलती के कारण यह दुर्घटना

घट गई।

रेणुका : जो डाक्टर जिन्दगी भर पापा की दवा करता रहा उसी को बुलाना ठीक था। कठवैद्यों के पाले मरीज को पटकने से तो उसे स्वाभाविक मौत मरने देना अच्छा।

राय : बात यह है·········

बेनर्जी : खैर जो हो चुका, वह हो चुका। व्हाट इज गॅन्ड वाय क्राइंग ओव्हर स्पिल्ट मिल्क।

वत्सला : पर यह भूल तो भयानक सिद्ध हुई।

रेणुका : क्या बक रही हो ? डाक्टर क्या करता ? पापा को तो दिल की बीमारी थी।

वत्सला : पर बहिन, आजकल तो डाक्टर मुर्दों को जिन्दा कर देते हैं। और फिर यह भी तो हो सकता है कि वह सचमुच में न मरे हों ?

राय : अब मेरी सुनेंगी आप। मैं दूसरे डाक्टर को ही लेने जा रहा था कि, पापा ने दम तोड़ दिया।

रेणुका : बिल्कुल ठीक।·········और ऐसी हालत में डाक्टर को बुलाने से क्या लाभ ?

राय : और जहां तक पापा के मरने का सवाल है मैं समझता हूं कि जिन्दे और मुर्दे का भेद तो बच्चा भी बतला सकता है।

रेणुका : नहीं ! नहीं !! वत्सला तुम्हें शंका हो तो डाक्टर को भी बुलवा सकती हो। चाहिए तो

पास्ट पार्टम करवा लो।

बेनर्जी : वत्सला, तो बुलाऊं, डाक्टर को।

वत्सला : (झिड़कते हुए) बड़े पैसे उछलते हैं तुम्हारे पास?

बेनर्जी : पैसे की बात मत करो। ससुर पर तो घर भी कुरबान कर डालना चाहिए।……… मगर अब डाक्टर को बुलाना वाकई बेकार है।

रेणुका : आज सुबह तो पापा पूर्णतया स्वस्थ थे। सुबह नास्ता करके वह बीमा कम्पनी की किश्त अदा करने आफिस गये थे।

बेनर्जी : यह बात सबसे शानदार की उन्होंने।

वत्सला : पापा बड़े अग्रसोची थे– यह तो उनका गुण था।

रेणुका : हाँ तो जब वह वापस आये तो बड़ी प्रसन्न मुद्रा में थे। उनसे खाना खाने के लिए कहा तो उन्होंने कहा कि भूख नहीं है। अभी तो सोने की इच्छा हो रही है। किसे मालूम था कि उनकी यह नीद आखिरी नींद होगी।

बेनर्जी : राम राम………

राय : और मैं आया तब भी वह सोये हुए थे।

वत्सला : उन्हें मृत्यु की पूर्व सूचना मिल गई थी।

राय : राम जाने।

रेणुका : खाने के बाद मैं यह देखने के लिए ऊपर आई कि पापा की नींद खुली या नहीं। पर वह तो बड़ी गहरी नीद सो रहे थे। मुझे शंका हुई और

यह देखने के लिए कि उनकी तबियत कैसी है, मैंने उनके बदन को छुआ तो उसे पूरी तरह ठंडा पाया। हिलाया-डुलाया मगर फिर भी कोई असर नहीं हुआ। मैंने ड्रेसिंग टेबल पर नहीं… …नहीं………टेबल पर बैठकर ५–१० मिनट इन्तजार किया………उनको उठाने का प्रयत्न किया, भगवान से मिन्नतें की, मेरा भ्रम भ्रम ही रहे……पर सचाई कभी बदली है……… ।

राय : तब मैंने रेणुका की रोने की आवाज सुनी और दौड़ा-दौड़ा ऊपर गया………

रेणुका : इन्होंने भी देखा………पर सब कुछ खत्म हो चुका था।

वत्सला : मुझे ऐसा हमेशा महसूस होता रहा है कि पापा का अन्त अकस्मात् होगा और हुआ भी यही।

(एक क्षण की शांति)

रेणुका : खैर, पापा तो स्वर्ग गये। पर तुम लोग पहिले ऊपर जाकर बन्दोबस्त में लगोगे या चाय पीना पसन्द करोगे ? सब काम में काफी वक्त लगेगा ………लोगों को बुलाना है, सामान लाना है, सभी कुछ करना है।

वत्सला : क्योंजी, क्या इच्छा है ?

बेनर्जी : जैसी तुम्हारी इच्छा। (स्टोव्ह जलने का शब्द)

राय : आप लोगों की राय हो तो अखबार के मृत्यु

कालम में कुछ दे दिया जाय ।

वत्सला : क्या लिखोगे ?

रेणुका : जो तुम्हारी सम्मति हो ।

बेनर्जी : वैसे यह अंग्रेजी प्रणाली है । क्या जरूरत है इसकी ? वैसे ही लोग जान जायेंगे ।

रेणुका : पापा ऊंचे वर्ग के लोगो में उठते-बैठते थे । शायद इस चीज से उनकी आत्मा को शान्ति मिले ।

वत्सला : तो क्या लिखेंगे ?

राय : यही कि········ उनकी याद में जो विगत २७ को हमें अनाथ छोड़कर चले गये ।

वत्सला : ऊंहूं– यह नहीं जमा ।

राय : कविता की कोई दो पंक्तियां दे दी जांय ।
कभी न भूलेगा स्नेह तुम्हारा, शबनम सा शीतल,
सुधि न तुम्हारी डूब सकेगी,
बह जाये कितना ही गंगा जल ।

वत्सला : नहीं जमा । कुछ ऐसी कविता हो । जिसमें उनके सारे गुणों का वर्णन हो और साथ ही यह भी प्रदर्शित किया गया हो कि हमारा अतुलनीय नुकसान हुआ है ।

बेनर्जी : इतनी बड़ी कविता देने में तो बहुत खर्चा हो जायेगा ।

वत्सला : खैर हम यह सब बाद में सोचेंगे । अभी तो पिता

जी के सामान की फेहरिश्त बनाना है। पर चाय पी ली जाय।

रेणुका : सामान में ऐसी कौन सी चीजें हैं ?

राय : जेवरात तो कोई है नहीं।

वत्सला : सोने की घड़ी तो खैर होगी ही। मेरे विनोद को उन्होंने अगली वर्षगांठ पर देने का वादा किया था।

रेणुका : मैंने तो उस घड़ी के बाबत आज तक कुछ नही सुना।

वत्सला : पर उन्होने वादा तो किया था। जब वह हमारे साथ रहते थे तो विनोद को बहुत प्यार करते थे।

रेणुका : (आश्चर्य मे) अच्छा ! हो सकता है।

बेनर्जी : और फिर कुछ नहीं तो बीमा पालिसी या पैसा तो है ही। आज सुबह उन्होंने किश्त अदा की उसकी पावती तो आप लोगों के पास होगी ही।

रेणुका : मैंने तो नहीं देखी।

राजू : (एकाएक उचककर) अम्मा, नानाजी आज बीमा कपनी थोड़े ही गये थे। वे तो रजिस्ट्री आफिश गये थे और फिर वहां से रजनी नानी के यहां।

बेनर्जी : रजनी नानी ? बेटा रजनी नानी कौन है ?

रेणुका : सुना है पिताजी ने बचपन से एक लड़की के साथ प्रेम किया था– रजनी वही लड़की है। उसके बाद पिताजी ने शादियां की और औलाद पैदा

की फिर माताजी की मृत्यु हो गई और उधर रजनी कुँवारी ही रही। तभी से पिताजी का उसके यहाँ फिर आना-जाना आरम्भ हो गया है।

वत्सला : मुझे लगता है कि पिताजी ने बीमे की किश्त अदा नहीं की।

बेनर्जी : बूढ़ा रसिया खूसट।

रेणुका : कैसा पिता है। मैंने पांच वर्षों से लगातार उसकी सेवा में रात को दिन– कर रखा था और उसका प्रतिदान पिता ने इस रूप में दिया है।

वत्सला : मेरे साथ ही वह ५–६ वर्ष रहे हैं।

रेणुका : इस बीच तुमने उन्हें हमारे विरुद्ध भड़काने के अतिरिक्त किया क्या है ?

राय : पर निश्चित रूप से कैसे कहा जा सकता है कि कि उन्होंने किश्त नही दी।

वत्सला : मुझे तो यकीन है कि किश्त नही दी गई।

रेणुका : राजू, जरा नानाजी के कमरे में तो और-और टेबल पर रखा चाभी का गुच्छा तो उठा लाओ।

राजू : (उठते हुए) नानाजी के कमरे में ?

रेणुका : हाँ–हाँ।

राजू : मुझे डर लगता है।

रेणुका : क्या मूर्खता की बातें करता है। वहाँ कौन बैठा है जो तुझे डरायेगा ? (राजू अनिच्छापूर्वक जाता है) अभी पता चल जाता है कि रसीद मिली या

नहीं। मिली होगी तो इसी ड्रेसिंग टेबल के ड्रावर में होगी।

बेनर्जी : कहां ? इसमें।

वत्सला : यह कहां से लिया बहिन। शायद अभी-अभी लिया है– पहिले जब मैं आई थी तब तो यह नहीं था।

रेणुका : राजू के पिताजी ले आये एक दिन।

वत्सला : है खूबसूरत। क्या नीलाम में खरीदा ?

राय : रेणुका कहां से खरीदा था ?

वत्सला : हां–हां नीलाम में से ही।

बेनर्जी : सेकन्ड हैण्ड माल है– साफ दिखाई दे रहा है।

वत्सला : तुम भी क्या हो जी। कलात्मक चीजें पुरानी ही होती है।

(राजू के आने का शब्द तथा उसी के तुरन्त बाद दरवाजा बन्द होने की आवाज)

राजू : अम्मा ! अम्मा !!

रेणुका : क्या हुआ राजू ?

राजू : नानाजी तो उठ रहे हैं।

बेनर्जी : क्या कहा ?

रेणुका : क्या कह रहे हो ?

वत्सला : बालक पागल प्रतीत होता है।

रेणुका : कैसी मूर्खतापूर्ण बातें कर रही हो। (राजू से) ऐसा कैसे हो सकता है ?

राजू : अम्मा मैंने अपनी आँखों से देखा है।
(स्तम्भित– चकित, भयभीत होने का वातावरण)

वत्सला : बहिन, तुम स्वयं जाकर देख आती ?

रेणुका : मेरे साथ आओ तो ?

राय : नहीं, यह अपने बस का रोग नहीं।

बेनर्जी : सुनो, सुनो।

(इतने में निरन्जन आ जाता है)

निरंजन : क्यों राजू को क्या हो गया? वत्सला और बेनर्जी, तुम लोग यहाँ कैसे ? (वह बेनर्जी के पास जाता है– मगर बेनर्जी डरकर दूर जा खड़ा हो जाता है)

रेणुका : (स्नेहपूर्वक पाल की ओर जाते हुए) क्या पिताजी आप ?

निरंजन : हाँ मैं ही हूँ बेटी। मगर तुम सब लोग भौचक्के क्यों हो गये ?

रेणुका : (दूसरों से) पिताजी जिन्दा हैं।

बेनर्जी : नहीं भाई।

निरंजन : (चिढ़ते हुए) अजीब तमाशा है। तुम लोग इस तरह घूर क्यों रहे हो ?

वत्सला : पिताजी आपने हमें अचम्भे में डाल दिया ? आपका स्वास्थ्य तो ठीक है ?

पापा : क्या कहा ?

वत्सला : आप स्वस्थ तो हैं न ?

निरंजन : पेट-दर्द के अतिरिक्त मैं पूर्णतया स्वस्थ हूँ।

निश्चित रहो, तुम सब लोगों के बाद ही मरूंगा। (राय की ओर मुखातिब होता है– राय दूर खडा हो जाता है) मेरी धोती कहां गई ?

रेणुका : (स्तम्भित होती हुई) ऊपर रखी होगी पिताजी।

निरंजन : राय तुमने क्यों पहिन ली मेरी धोती ?

रेणुका : वैसे ही गल्ती से पहिन ली होगी।

राजू : मैं खुश हूँ नाना कि तुम मरे नही।

रेणुका : (डांटती हुई) चुप रह शैतान।

निरजन : कौन मर गया है ?

रेणुका : (जोर से) राजू कह रहा है, तुम अरे-अरे क्यो कर रहे थे ?

निरंजन : (हंसते हुए) कहा नही मुन्ने थोड़ी पेट में गड़बड़ है।

रेणुका : (वत्सला को) राजू को पिताजी बहुत प्यार करते है।

वत्सला : (रेणुका को) हां, हमारे विनोद से भी पिताजी का बहुत स्नेह है।

रेणुका : पिताजी से पूछ लो कि उन्होने विनोद को सोने की घड़ी देने का वादा किया था या नहीं ?

वत्सला : (अचकचाते हुए) अभी नही, फिर कभी।

निरंजन : वत्सला तुमने बताया नहीं कौन मर गया है ?

वत्सला : विनोद के पिता के एक सम्बन्धी।

निरंजन : कौन से सम्बन्धी ?

वत्सला : भाई।
बेनर्जी : मेरा कोई भाई आज तक तो पैदा नहीं हुआ।
निरंजन : क्या नाम था उसका बेनर्जी ?
बेनर्जी : (घबराया हुआ) फ……
रेणुका : (सहायता करती है) फणीन्द्रनाथ।
वत्सला : (सहायता करती है) मुकर्जी।
निरंजन : अच्छा तो मुकर्जी का इन्तकाल कहाँ हुआ ?
बेनर्जी : अण्डमान में।
निरंजन : लगता है तुम्हारा भाई कोई सजायाप्ता आदमी था।
बेनर्जी : जी हाँ।
वत्सला : नहीं-नही।
निरंजन : खैर, छोड़ो तुम लोग शायद चाय के लिए मेरा ही इन्तजार कर रहे थे। अच्छा तो आओ चाय से भी निपट लिया जाय।
बेनर्जी : वाकई खुशी हुई यह देखकर कि आपका स्वास्थ्य अच्छा है।
निरंजन : मुझे क्या हुआ था ? थोड़ा लेट गया था।
बेनर्जी : लेट गये थे– सोये नही ?
निरंजन : नही-नही।
रेणुका और राय : अच्छा !
निरंजन : अर्द्ध निद्रित अवस्था जैसा मामला था।
बेनर्जी : फिर तो आप हर चीज देखते रहे होंगे–

देखा आपने ?

वत्सला : जीजाजी तथा बहिन को आपने नहीं देखा ?

निरंजन : क्यों नहीं देखा। क्यों भाई तुम लोगों ने मेरी ड्रेसिंग टेबल क्यों हटा दी और उसकी जगह अपनी बूढ़ी टेबल क्यों रख आए ?

वेनर्जी : (घबड़ाते हुए) कौन सी टेबल पिताजी ?

निरंजन : लो अब यह भी बताना होगा। सामने दीख नहीं रही है।

वत्सला : और कोई चीज तो गुम नहीं हुई ?

निरंजन : हां मेरी शाल भी तो रेणुका उठा लाई थी। कहां है वह ?

वत्सला : (खड़े होकर) अच्छा तो यह मामला था। मैं तो पहिले से ही जानती थी। पिताजी आप सरेआम ठगे जा रहे हैं।

रेणुका : (मृदुता से) वत्सला बहिन।

वत्सला : शर्म नहीं आती बहिन कहते हुए।

राय : देखो वत्सला जी.........

वत्सला : तुम भी चुप रहो जीजाजी। देख लिया, कितने पानी में हो।

राय : झगड़ो मत।

वेनर्जी : सच कहने का प्रत्येक को अधिकार है।

निरंजन : चुप रहो– क्या शोरगुल मचा रखा है। मुझे कौन ठग रहा था ?

वत्सला : बहिन और जीजाजी। इन्होंने समझा आप मर गये हैं और आपकी चीजें हथिया लीं– यह भी नहीं सोचा कि मेरा भी आपकी चीजों पर समान हक है।

निरंजन : तो यह बात है। तभी मैं सोच रहा था कि रेणुका और राय गड़बड़झाला क्यों कर रहे है। अब समझ में आया। तुम लोगो को शर्म नहीं आती कि जलाने के पहिले ही मेरे सामान के बँटवारे की बात करने लगे।

रेणुका : (सुबकते हुए) पिताजी।

निरंजन : मैं जानता हूँ रेणुका तुम तेज हो– शायद तुम्हें विश्वास नहीं था कि वसीयतनामे में मैं तुम्हारे साथ न्याय करूंगा इसीलिए यह सब बखेड़ा किया।

राय : आपने वसीयत भी लिख दी।

निरंजन : तो मुझे क्या कच्चा समझ रखा है ? मैं जानता हूँ किस तरह सम्पत्ति के पीछे झगड़े होते है– घर बर्बाद हो जाते हैं।

वत्सला : वसीयत में क्या लिखा है पिताजी ?

निरंजन : खैर अब उसकी जरूरत ही नहीं। मैं उसे नष्ट कर दूंगा।

रेणुका : मैं समझती हूँ पिताजी, मेरे साथ अन्याय न होगा।

निरंजन : अन्याय तुम्हारे साथ क्या किसी के साथ न होगा। कुछ समय मैं तुम्हारे साथ रहा और कुछ समय मैंने वत्सला के साथ गुजारा, मैं सोच रहा हूँ कि अब ऐसी वसीयत बनाऊं जिसके अनुसार मेरी सारी सम्पत्ति उस शख्स को मिले जिसके साथ मैं मरूं। मैं समझता हूँ तुम्हें मजूर होगा।

रेणुका और वत्सला : मजूर है।

वत्सला : अब आप किसके साथ रहना चाहते है? बहिन के साथ तो रहकर आप अनुभव कर ही चुके हैं।

निरंजन : वह भी बतलाता हूँ

रेणुका : आप जानते हैं पिताजी मेरे पास रहने के पूर्व आप वत्सला के साथ रहते थे। और वत्सला और हममें झगड़ा इसीलिए हुआ कि वह आपको जबरदस्ती मेरे यहां भेजना चाहती थी– किसी भी हालत में वह आपको रखना नहीं चाहती थी।

निरंजन : क्यों वत्सला सच है?

रेणुका : वत्सला की चुप्पी ही यह जाहिर करती है कि मैं जो कुछ कह रही हूँ, सच है।

निरंजन : मेरे सामने यह स्पष्ट हो गया है कि तुम दोनों की हार्दिक इच्छा मुझे रखने की नहीं है। आज के वाकये ने मेरी आंखें खोल दी हैं। इसलिए अब मैंने यह निश्चय किया है कि मैं तुम दोनों में से किसी के साथ नहीं रहूँगा।

रेणुका तथा वत्सला : मगर वृद्धावस्था में आप अकेले कैसे रहेंगे ?

निरंजन : तुम लोगों का यह कहना भी यथार्थ है। मुझे परिचर्या के लिये कोई न कोई चाहिए ही। इसलिए मैंने उसका भी इन्तजाम आज सुबह ही कर लिया है।

वेनर्जी : मुझे शुबह था ही।

निरंजन : तुम्हें शुबह हो या न हो– मैं ऐसे लोगों के साथ नहीं रह सकता जो सिर्फ मेरे पैसे से प्यार करते हैं।

रेणुका तथा वत्सला : तो फिर आपने इन्तजाम क्या किया है।

निरंजन : मैंने रजनी से विवाह करने का निश्चय किया है।

वेनर्जी : इस उम्र में विवाह ?

रेणुका तथा वत्सला : यह हम क्या सुन रहे हैं ?

निरंजन : वही जो सचाई है।

राय : यह तो भारत में कभी नहीं हुआ ?

निरंजन : भारत में तुम्हारे जैसी सन्तानें भी नहीं हुईं। और सुनो, मेरे साथ तुम लोगों में से कोई नहीं रहेगा।

राजू : मैं भी नहीं, नाना ?

निरंजन : सिवाय राजू के।

कुत्ते

पात्र-परिचय

परेश	:	एक नौजवान धनवान रईस और रायसाहब प्रीतमलाल का लड़का ।
मि० मित्तल	:	एक साठ वर्षीय पुरुष जिसने अभी-अभी चौथी शादी की है।
निशा	:	मि० मित्तल की चौथी स्त्री, जिसकी वय कोई १६, १७ साल के करीब ।
मि० शर्मा मि० वर्मा मि० चुग्गा	:	तीन अधेड़ पुरुष ।

सब इव्हनिंग क्लब के सदस्य ।

एक बूढ़ा नौकर

(स्थान– इव्हिनिंग क्लब, समय सायंकाल के ७ बजे, कोई २, ३ सेकन्डो के अन्तर से २, ३ कारो के आने, फाटक खुलने तथा बूटो की पद-चाप की आवाजें)

शर्मा : बाय, ! बाय !! एक सेकन्ड से– कहां भाग गया साला ?

वर्मा : (ज्यादह जोर की आवाज मे) अबे ओ बाय के बच्चे ।

बाय : आया साब, आया साब ।

चुग्घा : कहां मर गया था रे, आवाज तक नही सुनता ।

शर्मा : (हँसी की टोन मे) जुरवा के पास तो नहीं पड़ा था ?

(बाय को छोड़कर सबके हँसने की आवाज)

चुग्घा : बाय, जाकर तीन कुर्सियां बगीचे मे रख दो । आज बहुत गर्मी है । बाहर ही बैठेंगे । क्यों भाई शर्मा जी ? और देख– तीन ग्लास व्हिस्की, तैयार करके लाना ।

शर्मा : क्या रसीली बात कही चुग्घा तुमने ।

वर्मा : (घड़ी में देखते हुए) अरे भाई ७–५ तो हो चुका । अभी तक परेश का, पता नहीं । कहता था

इंग्लिश टाइम से आऊंगा।

शर्मा : अरे भई, निशा के साथ घूमता होगा। उस फुलझड़ी के साथ घूमो और टाइम की याद रहे, नामुमकिन।

चुग्घा : (उत्सुकता से) कौन सी निशा– शर्माजी।

वर्मा : ये लो शर्माजी, इन्हें पता ही नहीं निशा कौन है ?

शर्मा : चुग्घा, यार हो तुम पूरे काठ के उल्लू। निशा को नही जानते ? अभी १५ दिन पहिले ही तो हम सब उसकी शादी में शरीक हुए थे।

चुग्घा : मित्तल की वाइफ के बारे में तो नहीं कह रहे हो ?

शर्मा : हां भई, वही।

चुग्घा : तो वह परेश के चक्कर मे कैसे पड़ गई ? और मित्तल ने उसे परमीशन कैसे दे दी ?

वर्मा : यह सब तो उस बेचारे मित्तल से पूछना। आता ही होगा।

शर्मा : चुग्घा, जवानी हो, थोड़ा चिकना चेहरा हो, और माल हो, तो निशा क्या, परी भी आ सकती है।

चुग्घा : यह सब तो ठीक है, मगर परेश की यह हरकत अपने को नही जंचती। क्लब के किसी भी सदस्य को यह तो अधिकार नहीं दिया जाना

चाहिए कि वह किसी अन्य सदस्य की नव-विवाहिता पत्नी को वरगलाये।

वर्मा : यह तो मित्तल के बुढ़ापे का दोष है। क्या जरूरत थी, कि साठ साल की उम्र में ऐसी बुरी तन्दुरुस्ती में शादी करने की ?

चुग्घा : कुछ भी हो हमे एथीकल व्हेल्यूज को इस तरह नही भुलाना चाहिए। यदि नैतिकता को इस प्रकार कुचला जायेगा तो समाज का ढांचा ही गिर पड़ेगा। फर्ज करो कि शर्मा मित्तल की जगह होता तो क्या वह ऐसे मामलों को बरदाश्त करता ?

शर्मा : चुग्घा, तेरी बात को मानते हैं। मगर समाज में जब तक पैसे का बल रहेगा, ऐसी चीजे चलती ही रहेंगी तुम-हम क्या कर सकते हैं ?

वर्मा : शर्मा, यह बात मत कर यार, जिन्दा रहें गाधी बाबा, उसने जो नानकोआपरेशन का हथियार हमें दिया है, वह बड़ा पुरअसर होता है। जब ब्रिटिश सरकार भी उससे हार गई तो परेश जैसा मेढक, किस खेत की मूली है ?

चुग्घा : क्या बात कही वर्मा ने। आज ही शुरू कर दो परेश का बायकाट। आप साला क्लब छोडकर भाग जायगा, या फिर आदत सुधारेगा।

शर्मा : बेटा पता है, वह कलेक्टर बनने वाला है यहां

का ? सुनते है आर्डर इशू भी हो गये हैं। खबर ले लेगा।

चुग्घा · शर्मा, तू भी है डरपोक की औलाद। अपन किसी का दिया खाते हैं ? शान से धन्धा करते हैं। कोई गुलाम थोड़े ही हैं किसी साले के।

शर्मा : मैंने सुना है कि परेश का फादर प्रीतमलाल, एक जारज पुत्र है, याने वह सोहनलाल की रखेल का लड़का है, प्रीतमलाल पढ़ा भी मुश्किल से मिडिल तक है, मगर मानना पड़ेगा मुकद्दर को, कि वह आज लखपती है, और पैसा उसके पैर में लोटता है। पांच-दस लख से कम तो कैश उसके पास होगा नहीं, ४०, ५० मकान हैं, जमीन है, लाखों का कारोबार है वह सब अलग।

वर्मा : वह ऐसा कौन सा जोरदार बिजनेस करता था कि साला मालोमाल हो गया इतनी जल्दी ? यहाँ २० साल से भाड़ झोक रहे हैं, मगर एक मकान ढंग का नही बना पाये।

चुग्घा : मैं बतलाता हूँ, मुझसे पूछो। राइट का जमाना था। हिंदुस्तान व पाकिस्तान बन चुके थे। ऐसे में एक बोहरा, अपना सिनेमा बेचकर पाकिस्तान भागना चाहता था। प्रीतम ने मौके का फायदा उठाया, और लाखों का थिएटर कौड़ियों मे खरीद लिया। तकदीर अच्छी थी, जो पिक्चर लगाया,

हिट हो गया और प्रीतम सेठ प्रीतमलाल बन गये। लाखों कमाये मकान बनवा लिये, इस्टेट बना डाली।

वर्मा : मैंने सुना है कि ब्लैक-बैंक का धन्धा भी कुछ प्रीतम करता रहा है।

चुग्घा : अब क्यों पोल खुलवाते हो उसकी। उसने कौन सा पाप नहीं किया? इंडियन पीनल कोड में जितने भी जुर्म दर्ज हैं वे सब प्रीतमलाल बखूबी कर चुका है।

शर्मा : प्रीतम ने पैसा कमाया ही नहीं, जिन्दगी की रंगीनी के मजे भी पूरी तरह लूटे है। बुढ़ापे में भाई ने तीसरी शादी की थी, दो के रहते हुए।

चुग्घा : मगर आगे का हाल मुझसे पूछो वह दिल लगा बैठी किसी तीसरे से। कहते हैं इसी शोक में सेठ प्रीतमलाल का हार्ट फेल होते-होते बचा।

वर्मा : ऐसे बाप का बेटा भी अफलातून हो, तो इसमें ताज्जुब ही क्या? गाल्टन और गोडार्ड ने बताया है कि नैतिक बुराइयों की जड़ में यह पैतृक संस्कार ही काम करते हैं। सुना है परेश का चरित्र शुरू से ही भ्रष्ट है।

चुग्घा : भ्रष्ट? महाभ्रष्ट कहो। मैं तो उससे हाथ मिलाने के बाद साबुन से हाथ धोता हूँ कि कहीं उसके जर्म्स मेरे घर-आंगन में न फैल जायें

उस दिन जब वह मेरे घर पार्टी में बिना बुलाये ही आ धमका था, तब मैं कुछ बोल नहीं सका। मगर उसके जाते ही सारे घर के फर्श साबुन-सोडे से धुलवा डाले थे मैंने। सोचने की बात है भाई, कि नैतिकता की कद्र हम नहीं करेंगे, तो क्या और करेंगे ?

वर्मा : बात बिल्कुल ठीक कह रहे हो।

शर्मा : हां, इस बात को लेकर दो मत हो ही नही सकते।

चुग्घा : तो प्रामिस करो कि आज से परेश का बहिष्कार।

वर्मा व शर्मा : (एक साथ) हां, हां, बहिष्कार बिलकुल बहिष्कार। उसके पास फटकेंगे भी नही, उसके साये से भी दूर रहेंगे, और वह आया भी, तो साले से बात तक न करेंगे।

(कार के आने की घर्-घर् आवाज, भोंपू का शब्द। फाटक का खुलना, और जोधपुरी जूतियो की हल्की पद-चाप की ध्वनि)

वर्मा : लो परेश आ गया। (तीनों का झटके के साथ खड़े होना, तथा एक साथ बोलने की आवाज) आइएजी परेश साहब, गुड इव्हनिंग।

चुग्घा : (निहायत नर्मी से) बड़ा इन्तजार करवाया आपने।

परेश : (नशीली आवाज मे) जो मजा इतजारी में है, वस्लेयारी में कहां ? क्या करें यार चुग्घा, निशा रानी ने देर कर दी। तुम तो जानते ही हो, कि

औरत बनाव-सिंगार में उतना ही वक्त जाया करती है, जितना सुबह का डूबा चांद फिर से आसमान पर आने में ।

वर्मा : यह चांद की बात भी आपने खूब कही ।

परेश : बगल में चांद हो तो चांद ही तो याद आयेगा ।

चुग्घा : (प्रशंसा के लहजे में) परेश बाबू आपकी जिन्दगी भी कैसी गीतों भरी कहानी है ।

परेश : है ही नही, रही है, है और रहेगी·········

चुग्घा : क्या रोमान्टिक तबियत पाई है आपने ?

शर्मा : जिन्दगी का लुत्फ लेना, तो बस कोई आप से सीखे ।

परेश : बस यही तो सिखाना चाहता हूँ तुम्हें । अपनी जिन्दगी तो नदी का बहावदार पानी है, जो किनारे की हर बेल से अटैचमेन्ट रखता है, हर फूल से मोहब्बत करता है और क्षण भर ठहर कर आगे निकल जाता है ।

(दीवाल घड़ी मे ७ बजने का शब्द, सात बार टन-टन की आवाज)

परेश : लेट हो रहे हैं यार, अब चलो भी ।

वर्मा : पर, आप तो निशाजी के साथ जा रहे है ? हम लोग क्या करेंगे आपके साथ जाकर ? और शायद, निशाजी तो मोटर में बैठी इन्तजार कर रही हैं आपका ।

शर्मा : हाँ भाई, दाल-भात में मूसलचन्द क्यों बनें हम

लोग ?

परेश : अरे यार तुम भी निपट गधे हो, तुम दूसरे बाक्स में बैठ जाना, सिनेमा ही तो जाना है। चुग्धा तेरे पास कार नहीं है ना। चल मेरी कार में पीछे बैठ जाना। पर हरामखोर, सुन, पापाजी से जाकर मत कहना। बेकार चिल्लायेंगे।

चुग्धा : (बड़ी अनुनय से) क्या बात करते है, परेश-कुमारजी। आप जैसे कितने ही रईसों के साथ रहा हूँ। मेरी बात तो मैं दीवाल को भी नहीं सुनाता। इतमीनान रखिए आपके पापाजी को बिलकुल खबर नहीं लगेगी।

शर्मा : पर जा कहाँ रहे है हम सब……… ?

परेश : वुमन इन लव्ह में। बेटा पढ़ा है ? डी० एच० लारेन्स का उपन्यास फर्स्ट शो ही देखना है। निशा को जल्दी घर जो जाना है ? (सड़क की कार से आवाज, पहिले भोपू की फिर एक महिला की) परेश आओ देर हो रही है, वी आर गेटिंग टू लेट। …… (सबके जाने के पद-चाप, मोटर जाने की फिर वही घर-घर, फाटक खुलने, बन्द होने की आवाजें)

(संगीत)

बाय : (राहत के भाव से) चले गये।

बाय का नन्हा लड़का : बपू वे चले गये ?

बाय : हाँ रे······ अभी तो गये।

बाय का लड़का : बापू, ये लोग कैसे बदतमीज हैं ? आपको बाय कहते हैं ? मैंने पढ़ा है, कि बाय का मतलब होता है लड़का, तुम तो बापू बहुत बड़े हो, फिर ये लोग बाय क्यों कहते हैं ?

बाय : यह कुत्ते है रे ········· न बोलने का तमीज न बात करने का। एक दूसरे की निन्दा पीठ पीछे करेंगे, और सामने आने पर पाल्तू कुत्ते की तरह उसका तलुआ चाटेंगे। तू इन कुत्तों की बात न सुना कर।

———

बहादुर

पात्र-परिचय

विक्रमसिंह शेरसिंह शर्मा	:	पुरुष
लिली, शीला	:	स्त्रियाँ

(मोटर चलने की आवाज)

विक्रम : बात उन दिनों की है, जब मैं आसाम मे था।

(एक तेज घुमाव का स्वर)

लिली : अरे, रे, मोटर को तो आप ऐसे चक्कर खिला रहे हैं जैसे रेड-स्टार सर्कस का जोकर।

शीला : या फिर जैसे आप इटली की मोटर-रेस में पार्ट ले रहे हों।

लिली : सुना है विक्रम ने रेस मे फर्स्ट नम्बर पाया था।

शर्मा : मैंने तो सुना है, विक्रम मोटर-रेस मे भाग लेने वालों की मोटर धोया करता था। उन्हें देख-देख कर बेचारा कुछ मोटर भगाना सीख गया है।

(एक हँसी का समवेत स्वर। सहसा चमगादड की पर फटफटाने की आवाज)

शीला : (सहमते हुए स्वर से) ओह, यह क्या ?

शेरसिंह : चमगादड़ थी मैडम।

शर्मा : तुम भी क्या डर गई मैडम ? कहीं चमगादड़ भी चमगादड़ से डरती है।

(लिली की ओर से हँसने की आवाज)

विक्रम : हां, तो मैं आसाम की बात कह रहा था। तुम में से तो कोई वहां गया नहीं। क्या बताऊं, वहां के जंगल इतने घने होते हैं कि हाथ को हाथ नहीं दिखता और पैरों को पैर।

शर्मा : और न आंख को आंख।

विक्रम : चांद तो उन जंगलों में कभी झांकता भी नहीं कि कहीं उस वियाबान में खो न जाये। कर्नल बेनर्जी को तो आप जानते ही हैं। वे मेरे उन दिनों पड़ोसी थे।

शर्मा : याने जगल में पड़ोसी थे ?

विक्रम : हां यार, जंगल में ही, जहां उन दिनों मैं रहता था। ......पता नहीं कैसे एक रात उनकी रीढ़ में ऐसा दर्द उठा कि वे चीख उठे। मजबूरन मुझे जीप लेकर डाक्टर बुलाने को दौड़ना पड़ा।

लिली : डाक्टर का घर तो बड़ी दूर होगा।

विक्रम : हां, बड़ी दूर...... मैं डाक्टर को लेकर लौट रहा था कि जल्दी के विचार से मैंने जो जोर से एक्सीलेटर पर पैर रखा–

(गाड़ी के झटका लेने की आवाज)

समवेत स्वर : अरे रे, विक्रम क्या पागल हो गये हो !

विक्रम : आज तो खैर बच गये, शायद कोई पुण्यात्मा इस कार में बैठा हो।

शर्मा : तुम मेरा नाम स्पष्ट रूप से क्यों नहीं ले लेते ?

लिली : ठीक तो है, शर्माजी से अधिक पुण्यात्मा कौन होगा जो बिना नहाए आमलेट को छूते भी नहीं ?

विक्रम : पर उस दिन तो मेरी जीप में शर्मा था नहीं। इसलिए जीप पेड़ में टकरा कर ही मानी। खैरियत यह थी कि न मुझे चोट आई, न डाक्टर को। पर गाड़ी बुरी तरह बिगड़ गई थी। जीप को लिहाजा, वहीं, छोड़कर…… ।

शर्मा : भाग खड़े हुए।

विक्रम : अबे भागता कैसे ? मेरे साथ था डाक्टर, जिसका नाम जहाँ तक मुझे याद आ रहा है, मैकेंजी था, भारी भरकम था।

शर्मा : तुम कौन से दुबले हो। विक्रम उर्फ एलीफैन्ट तो तुम्हारा सदियों से चला आया नाम है।

विक्रम : जो कुछ भी हो। मैकेंजी भी इतना मोटा था, कि उसने अपना भारी बेग उठाने में असमर्थता जाहिर की। लिहाजा वह बेग मैं उठाकर पैदल ही चलने लगा। कुछ दूर ही चला होगा कि एक दहाड़ सुनाई दी। स्पष्ट ही शेर गरज रहा था, हम से कुछ ही फुट की दूरी पर। मैकेंजी तो इतना घबरा गया कि उसका हार्ट फेल होते-होते बचा। मगर मैं तनिक भी नहीं घबराया। हम दोनों एक झाड़ की आड़ में छिप गये। जैसे ही शेर हमारे पास से निकला मैं उचक कर उसकी

पीठ पर सवार हो गया और उसका गला इतनी जोर से दबाया कि वह वहीं ढेर हो गया।

शर्मा : विक्रम यदि तुम्हारी बात सच है, तो मैं तुम्हें आज इसी मोटर में इसी वक्त इन प्रतिष्ठित व्यक्तियों के सामने, 'शेरों का शेर' का खिताब देता हूँ।

(हँसी)

विक्रम : उसी रात को हमें एक और मुसीबत का सामना करना बाकी रह गया था। उस संघर्ष से घबराकर मैं डाक्टर के साथ वृक्ष के नीचे बैठ गया, सुस्ताने के लिये। अभी ५ मिनट भी नहीं हुए थे कि एक विशालकाय सर्प हमारे पास आकर फुंफकारने लगा। डाक्टर तो फिर घबरा गया।

शर्मा : बेचारा क्लोराफार्म नही लाया होगा, नहीं तो सर्प को सुंघा देता।

विक्रम : मैंने आव देखा न ताव, तुरन्त ही पास का एक विशाल पत्थर उठाकर सर्प पर इस तरह फेंका कि उसका काम तमाम हो गया।

लिली : वाकई तुमने अपने नाम के अनुरूप ही काम किया, विक्रम।

शेरसिंह : मुझे तो लगता है, कि विक्रम हमें चक्रम बना रहा है। मैं अपने साहस की सच्ची कहानी सुनाता हूँ, सुनोगे ?

समवेत स्वर : जरूर, जरूर।

शेरसिंह : एक दिन घनघोर बरसात हो रही थी। वैसी बरसात मैंने आज तक नहीं देखी। उस बरसात के साथ ही अमावस का घना अंधियारा था। एसे में मुझे एक आदमी ने आकर खबर दी कि हमारी घुड़साल तक शेर के निशान है और वह एक घोड़े को पकड़ कर, उठाकर ले गया है। मामले की गम्भीरता को देखकर मैंने उसी वक्त शेर का पीछा करने का निश्चय किया। मैंने तुरन्त अपनी पचासों गज मार वाली बन्दूक सँभाल ली। बन्दूक इतनी बड़ी थी कि उसमे बहुत बड़ी साइज की गोली लगती थी।

शर्मा : फुटवाल से बड़ी तो न होगी।

(समवेत······हँसी)

शेरसिंह : अब सुन भी शर्मा। पैदल ही मैंने उस शिकार का पीछा करने का निश्चय किया। चलते-चलते चलते·········।

शर्मा : हिन्दुस्तान से बलूचिस्तान पहुँच गये।

शेरसिंह : नहीं सुनाता, नहीं सुनाता। हजार बार गरज हो तो सुनो।

शर्मा : अब कहो भी। नखरे मत करो। तुम्हारे नाम के साथ नखरा मेल नहीं खाता। मैंने तो तुम्हारी छलांग-मार चाल की तारीफ ही तो की है

और फिर तुम इस कहानी को पचा भी नही सकोगे। कही पेटे में दर्द होने लगा तो आस-पास डाक्टर भी नही है।

शेरसिंह : चलते-चलते मैं जंगली ढलवान भरे रास्ते पर आ गया। फिसलन इतनी थी कि पैर जमाना मुश्किल हो रहा था। लिहाजा रायफल को मैंने हाथ में पकड़ लिया व चारो हाथ पैरों पर चलने लगा।

शर्मा : वाकई, यार तुम उस वक्त शेर की ही चाल चल रहे होगे।

शेरसिंह : मियां तुम होते तो होस–हवास गुम हो जाते। हाँ, तो चलने के कारण अचानक मेरे हाथ की रायफल छूट गई और पेड़ पौधों से उलझती, टकराती गिर गई, कोई सौ फिट नीचे गार में।

लिली : तो तुमने लौटने की कोशिश की होगी।

शेरसिंह : लौटना नामुमकिन था। उस अंधेरे में भी मैंने नीचे अपनी गिरी बन्दूक को देखने की कोशिश की। अचानक चीखते उल्लू उड़ गये। और पत्तियों की लड़खड़ाहट बढ़ गई। जैसे ही मैंने सामने देखा, तो मैं एक बार सन्न रह गया। सामने एक ७ फिट लम्बा चीता जलती आँखों से मुझे घूर रहा था।

शीला : बाप रे, बाप !

शेरसिंह : मेरे देखते ही वह सिकुड़ा। उसका सिकुड़ना इस बात की निशानी थी, कि वह उछलकर हमला करने वाला है। मेरे पास उस समय हथियार के नाम सिर्फ शिकारियों का चाकू बच रहा था। जैसे ही चीता मुझ पर लपका। मैंने उसके कण्ठ में चाकू भोंक दिया, और चीते का काम तमाम हो गया

लिली : शेरसिंह तुम सच कह रहे हो?

शेरसिंह : तो मैडम क्या आपको मेरी बात में झूठ की गंध आ रही है। मैं सोलह आने सच बता रहा हूँ। हकीकत········· सिर्फ हकीकत ही बयान कर रहा हूँ।

शर्मा : यदि आप लोग कहें तो बन्दा भी अपने कुछ संस्मरण सुनाये।

समवेत स्वर : अवश्य, अवश्य, प्रोफेसर।

शर्मा : सज्जनों, आपको सुनकर शायद ताज्जुब हो, मगर यह सच है कि मैंने एक तेंदुए को जूते मारे हैं।

(समवेत हंसी)

विक्रम : तुम तो छुपे रुस्तम निकले, शर्मा।

शर्मा : सिर्फ ३६५ दिन पहिले की यह वारदात है। मैं शेरगांव गया था घूमने, फिरने के लिए।

शेरसिंह : शेरगांव, यह कौन सी जगह है?

शर्मा : यहां नक्शा नही है। नहीं तो तुम्हें समझाता। इतना समझो कि शेरगांव के जंगल में शेरों का झुण्ड ऐसा ही घूमता है जैसे गांव में गाय भैंस। मैं ठहरा घुमक्कड़ आदमी। एक दिन कुछ ऐसा ही मन में आया कि शेरगांव के जंगल तक चला जाय। लिहाजा मैं अकेला ही चल पड़ा। कुछ ही दूर गया था कि एक खेत में मटरों की फली मुझे दिखाई दी। मैं मटरों का बड़ा शौकीन हूं। सोचा २०, ३० मटर की फलियां ही तोड़ लूं। खाते-खाते घूमने में मजा आयेगा। लिहाजा मैं खेत में घुस गया। खेत में मुझे उस वक्त कोई दिखाई नही दिया। खेत में कुछ ही अन्दर मैं दाखिल हुआ था कि मुझे सामने एक तेंदुआ स्थिर-भाव से खड़ा नजर आया। विश्वास कीजिये, अपने तो होश हवास गुम हो गये।

लिली : हार्ट फेल तो नही हुआ? प्रोफेसर।

शर्मा : हार्ट फेल हो जाता तो आज आप से बातें करने का सौभाग्य कैसे पाता, मैडम। मगर यह बात जरूर है कि हार्ट फेल होते-होते बच गया।

शीला : तो क्या तेंदुए ने आपको ब्राह्मण समझ कर छोड़ दिया?

शर्मा : वही सुना रहा हूं। तेंदुआ तो सामने खड़ा था, और अपने राम के पास हथियार नाम की कोई

चीज नहीं थी। चाकू भी नहीं। मैंने नालदार जूते पहन रखे थे। तेंदुए को भगाने के लिए मैंने एक के बाद एक दोनों जूते जोर से फेंक मारे, और आंख मूंद कर खड़ा रहा। मैंने सोचा या तो तेंदुआ भाग ही जाता है जूते खाकर, या मुझे खत्म कर डालता है। जब पांच मिनट तक तेंदुए ने मुझ पर कोई आक्रमण नहीं किया, तो मैंने यह देखने के लिए आंख खोली कि वह भाग गया है या नहीं ?

शीला : तुम्हारे जूते खाकर भी वह नहीं भागा ?

शर्मा : नहीं मैडम, वह वहीं खड़ा रहा, न आगे बढ़ा न पीछे। मुझे शंका हुई, तेंदुआ बेहोश तो नहीं हो गया ?

लिली : तुम्हारे जूतों का स्पर्श पाकर वह जड़ तो नहीं हो गया था ? कहते हैं राम की पादुका के स्पर्श से पाषाण अहिल्या बन गया था। तुम्हारी चरण पादुकाओं का स्पर्श पाकर शायद तेंदुआ पाषाण बन गया हो ?

शर्मा : तुम्हारा कहना ठीक है, लिली। इस कलिकाल में भी ब्राह्मण का प्रभाव अक्षुण्ण है। मेरे जूते के स्पर्शमात्र से तेंदुआ पाषाण तो नहीं लकड़ी का खिलौना जरूर बन गया ! कम से कम मैं तो यही मानता हूँ। मगर कम्बख्त किसान कहीं से

आ टपका उसने बताया कि वह तो जानवरों को डराने के लिए लकड़ी का ढांचा खड़ा कर दिया गया था।

(सब हँसते हैं)

शीला : मानते हैं भई आपके शिकार को याने तेंदुए पर जूते की मार को।

लिली : मुझे खुशी है कि आज इस मोटर में विक्रम, शेरसिंह, शर्माजी जैसे बहादुर एक साथ बैठे हैं। हमारी इन्दौर से ग्वालियर तक की यात्रा इनके कारण निरापद रहेगी। इनके होते हुए न तो कोई जानवर हमें हाथ लगा सकता है और न कोई डाकू।

विक्रम तथा शेरसिंह : बिल्कुल सही फरमा रही हो। पचास डाकुओं से हम अकेले ही निपट सकते हैं।

शर्मा : यह तो ठीक है, मगर रास्ते मे ये झाड़ कैसे पड़े हैं?

(गाड़ी रुकने का शब्द, कुछ आदमियों के पैरों की आवाज)

एक आवाज : हैन्ड्स अप……हथियार हमारे हवाले कर दो— और जो कुछ माल हो सामने रख दो। यदि तनिक भी गड़बड़ की तो भून दिये जाओगे, और लाशें शेरों को खाने के लिए गार में फेंक दी जायेंगी।

(एक मिनट की स्तब्धता)

विक्रम : आप लोगों की बातें हमें मंजूर हैं। ले लीजिए सब कुछ।

(संगीत तथा कुछ पैरों के जाने की भारी आवाज)

शर्मा : लो शिकारी तो खुद शिकार हो गये।

लिली : विक्रम तुम्हारी भरी बन्दूक धरी रह गई, और ये लोग सब माल मार ले गये।

शीला : शेरसिंह तुम्हारी बहादुरी बताने का इससे अच्छा मौका कब मिलेगा? अभी भी वक्त है, पीछा करो।

शर्मा : विक्रम और शेरसिंह तो बहादुर लोग है, बोलते नही, करके बताते हैं। बाकी मैडम आप भूल रही है कि हम लोग सिर्फ यात्रा करने निकले हैं किसी का पीछा करने नहीं।

विक्रम : ऐसी बात नहीं है। ऐसी बात नही है। मैं इन लुटेरों को छोड़ने वाला नहीं हूँ। पोलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट मेरा गहरा दोस्त है, मैं इन लोगों को ठीक करवा कर ही छोड़ूंगा।

शेरसिंह : पुलिस यदि इन्हें पकड़ने मे नाकामयाब रही तो मैं इन्हें पकड़कर बताऊंगा।

शर्मा : और अगर आप सब बात-बहादुर नाकामयाब रहे तो बन्दे को कहिएगा।

(समवेत हँसी)

विक्रम : टाइम क्या हुआ होगा? घड़ी तो लुटेरे ले गये

शेरसिंह : बारह बजे होगे।

शर्मा : ठीक है.........बारह तो बज ही गए। और दोस्तों मैं सोचता हूँ कि आज आपको जो नुकसान हुआ है उसकी पूर्ति कुछ अंश तक टू एडव्हान्चर...... मैगजीन में लेख लिखकर पूरा करने की मैं कोशिश करूंगा। चिअर अप हेन्स......और बहादुरों, शुक्र करो उस गाड का जिसने कुमारियों के वस्त्र और विक्रम की मोटर को लुट जाने से बचा लिया। अब तो हमें फुर्र हो जाना चाहिए नही तो इस मनहूस रोड पर न जाने कौन-सी मुसीबत फिर खड़ी हो जायेगी।

(मोटर स्टार्ट होने की आवाज)

———

पापी अपने आप मर गया

पात्र-परिचय

महेशराम जमनाप्रसाद वृद्धेश्वर	:	गांव के व्यापारी
बेनी	:	एक आवारा जैसा आदमी
कालूराम	:	ताड़ीखाने का मालिक

दृश्य– गाँव के मन्दिर का भीतरी भाग। शिवलिंग स्थित है। उसके बाहर की दालान। टाट और छादरियाँ पड़ी हुई हैं। ठंड का मौसम है, इसलिए एक सिगडी जल रही है। जिसके आसपास महेश, जमना और बुद्धेश्वर बैठे हैं।

(संध्या का समय)

महेश आदि की पोशाक तो करीबन एक जैसी है मगर देखने से महेश जरा अहमन्य जैसा प्रतीत होता है। जमना एक सीधा-साधा व्यक्ति नजर आता है, तथा बुद्धेश्वर विचार में डूबा सा लग रहा है। बेनी दालान से बाहर कालू से बात में लगा हुआ है।

कालूराम : (झिड़कते हुए) कह दिया न बेनी, आज तुझे ताड़ी नहीं मिल सकती। मेरा कहना मानो तो घर जाओ, और आराम करो।

बेनी : मालिक, कह तो रहा हूँ, कल पैसे ले लेना।

कालू : सुन लिया बाबा, सुन लिया! पर मुझे तुम्हारा कहना नहीं मानना। फिर………।

बेनी : (गुस्से में) खूसट कहीं का।

(बेनी पैर फटकारते हुए जाता दिखाई देता है और कालू दालान में प्रविष्ट होता है)

महेश : आपने ठीक फरमाया। उसने काफी पी ली है।

जमना : पर देखो तो, फिर भी कैसा जम के चल

क्यों बुद्धेश्वर ?

बुद्धेश्वर : (जैसे नींद में जागकर) कौन, अच्छा वेनी, मैं तो खुद उससे तंग आ चुका हूँ। हमेशा मेरी दूकान के आस-पास किसी फिकर में घूमा करता है। आज सांझ को भी जब मैंने दूकान बंद की, वह सामने खड़ा था, बड़ी मुश्किल से भगाया।

(फिर विचार मग्न हो जाता है)

कालू : मरे नशलची है। उससे डरने की जरूरत नही। मुझे तो उस पर रहम आता है। क्या करूं, भगवान ने ऐसा गंदा धंधा मुझे दिया है। पेट के खातिर सब कुछ करना पड़ता है। पर मैं चाहता हूँ कि वेनी जैसा आदमी मेरी दुकान पर न आवे। कम्बख्त को एक मास से देख रहा हूँ। दिन पर दिन बिगड़ता ही जाता है। पता नहीं कहां से पैसा ले आता है ?

महेश : बिगड़ा जाता है ? राम राम। पर वह भी बेचारा क्या करे। ले दे के दुनियाँ में उसका एक ही तो दोस्त था कृपाराम। वह भी उससे जुदा हो गया। गम गलत करने को पीता होगा बेचारा।

कालू : तुमने ठीक कहा। मगर भाई मेरे, पीने की भी तो कोई सीमा होती है।

महेश : होगा यार, मगर आज ठंड कड़ाके की पड़ रही है।

आखिर पंचों ने भी तो जिसमें बुद्धेश्वर भी था, उसे मुजरिम पाया था।

बुद्धेश्वर : (उद्विग्न-सा) मुझे तो घर जाना चाहिए, घर की चाभी मेरे पास नहीं है। शायद पड़ोसी को दे आया हूँ या और कहीं रखकर भूल गया हूँ।
(उठने का यत्न करता है)

महेश : तो इसमें घबराने की क्या बात है? तुम्हारा घर लूटने को कोई नहीं आता। (जमना की ओर मुखातिब होकर) पर कृपाराम पर तो मुझे कभी शक तक नहीं हुआ कि वह कभी भी किसी की भी हत्या कर सकता था।

बुद्धेश्वर : बात अजीब भले ही लगे। पर जो पुरावे हमारे सामने पेश किये गये, उसमें तो उसका हत्यारा होना पूरी तरह सिद्ध हो गया था।

जमना : पुरावे तो खैर पेश किये ही गये होंगे।

कालू : बेनी तो कृपाराम का ही दोस्त है न। आज कह रहा था उस जज और उन तमाम पंचों को मौत के घाट उतार दूंगा, जिन्होंने कृपा को सजा दी है।

बुद्धेश्वर : कैसी उटपटांग बातें करने लगा है? क्या उसका सिर फिर गया है?

महेश : शराब पीने पर तो आदमी बहकता ही है।

जमना : पर कालूराम के कहने से तो ऐसा लगता है कि

वह उसकी बहकमात्र नहीं है ।

बुद्धेश्वर : (कांपते हुए) कहीं बेनी अपने मन की बात न कह रहा हो ।

महेश : हो सकता है ।

बुद्धेश्वर : इन शराबियों का क्या ?

कालू : पर इसमें, तुम्हारे घबराने की क्या बात है ? इन शराबियों की बकवास को मैं खूब जानता हूं । इनमें कुछ दम नहीं रखा । (कुछ देर चुप्पी) मुझे लगता है कि बेनी फिर आयेगा । ऐसे आदमी मुझे कतई पसन्द नहीं । मैं साले को अब रत्ती भर शराब नहीं देने वाला, मैं मंदिर आया तो यहां पर भी पीछा नहीं छोड़ता ।

जमना : ठीक कह रहे हो, नशे में धुत्त आदमी भूत जैसा होता है । क्या मालूम क्या कर गुजरे ?

बुद्धेश्वर : (जैसे अर्द्ध जाग्रत अवस्था में) मैंने कृपा को आज सुबह देखा था, मगर उसकी सूरत मे वह बिलकुल निरीह और नादान नजर आरहा था ।

महेश : मैंने भी कभी कल्पना नही की कि कृपा जैसा आदमी ऐसा घृणित काम करने को सोच भी सकता है ?

जमना : मगर कृपा और बेनी की दोस्ती भी आदर्श थी । हमेशा साथ रहते थे, खाते-पीते, उठते-बैठते, सोते जागते । ······अब चलना चाहिए, रात बहुत हो

गई है। (घोड़े की टाप की आवाज) मगर यहाँ इतनी रात गये घोड़े पर कौन आ रहा है? देखो, देखो, उसके हाथ में तलवार जैसा कुछ चमक रहा है। (बुद्धेश्वर के चमकने–डरने–उचकने की चेष्टा)

महेश : वाकई, इतने रात गये कौन आ सकता है। परन्तु बुद्धेश्वर तुम क्यों काँप रहे हो तुम्हें कोई खतरा नही है।

वुद्धेश्वर : भई आज तो मुझे न जाने क्यों डर लग रहा है, मेरा तो घर तक जाना भी मुश्किल है।

जमना : घबराओ नहीं, चित्त को स्वस्थ रखो। सच बात तो यह है कि तुम्हें आज वध-स्थल पर नहीं जाना चाहिए था।

वुद्धेश्वर : (काँपते हुए) मैं तुम्हें सच कहता हूँ, मैंने कृपाराम को– लाल फन्दे से मरते हुए देखा है, ।

(महेश और जमना एक दूसरे की ओर देखते हैं)

महेश : अच्छा !

वुद्धेश्वर : हाँ; फन्दा ही था, लाल फन्दा। मरने पर भी ऐसा लग रहा था, जैसे वह घूर रहा हो……।

जमना : घूर रहा हो ?

महेश : क्या बात करते हो ? (घुड़सवार का आगमन)

आगन्तुक : क्या कड़ाके की ठंड है। (हाथ सेकता है। महेश, जमुना, कालूराम, आगन्तुक की ओर देखते हैं। ठंडी

हवा का एक झोंका आता है।)

महेश : हे भगवान !

जमुना : (दाँत किटकिटाकर) ऐसा जाड़ा नहीं देखा !

बुद्धेश्वर : (आगन्तुक से बात करने ही वाला है कि अर्ध निद्रित अवस्था में) फन्दे में कँसी-कँसी दोघूरती हुई आँखें...हतभाग्य...निरपराधी कृपा।

महेश : क्या कह रहा है ?

जमना : बुद्धेश्वर, भई चिन्ता मत करो, (महेश की ओर आँख से इशारा करते हुए) लगता है कि यहाँ आने के पहिले से ही भाई भावुकता से भरा था। (आगन्तुक से) बड़ी अंधेरी रात है।

आगन्तुक : हाँ, भाई, मैं समझता हूँ मैंने आप लोगों को कष्ट नहीं दिया है। क्या करता, ठंढ कड़ाके की है, सिगड़ी देख कर रुक जाने की इच्छा हो ही गई।

महेश : इसमें कष्ट की क्या बात है, महाशय, यह तो मंदिर है। भगवान के दरबार में प्रत्येक के लिये जगह है। और यदि यह जगह हमारी भी होती तो भी हमको ऐसे वक्त में तुम्हारी सहायता करने में प्रसन्नता ही होती। इसलिये संकोच की जरूरत नहीं।

आगन्तुक : मैं आप लोगों का आभारी हूँ। –यहीं आस-पास कोई गाँव है– है न ?

महेश : हाँ, यह पास ही तो गाँव है। संगमनेर।

आगन्तुक : तो आप यहाँ एक ऐसे आदमी को जानते होंगे जो बहिरा और शायद गूंगा भी है।

महेश : ऐसा आदमी तो हमारे गांव में नहीं है।

जमना : मगर एक ऐसा आदमी जरूर है जो महान शराबी है।

आगन्तुक : तो यही आदमी होगा। इस आदमी ने मुझे ऐसा अनुभव दिया जो आजन्म याद रहेगा।

महेश : क्यों, क्या बात थी ?

आगन्तुक : जहाँ तक मैं जानता हूँ, पहिले पहल वह सड़क के बीचो-बीच चल रहा था, घोड़े के टाप की ध्वनि भी उसे अपने रास्ते से नहीं हटा सकी। आप तो जानते ही हैं कि रास्ता कितना सँकरा है, फिर एकदम से भागते हुए घोड़े को रोकना भी सम्भव नहीं है। मैं सोच रहा था कि यह आदमी घोड़े के नीचे न आ जाये। पर जैसे ही घोड़ा नजदीक आया, वह आदमी फुर्ती से हट गया। पर दूसरे ही क्षण देखता हूँ कि वह फिर सड़क के बीचोबीच चल रहा है। मेरे घोड़े का धक्का भी शायद उसे लगा हो। मगर वह अलमस्त होकर चलता ही रहा।

महेश : बड़े ताज्जुब की बात है ! आपने क्या किया ?

आगन्तुक : मैं क्या करता। मुझे लगा कि कोई शराबी जैसा था। या फिर कोई बहरा, गूंगा। मगर हां याद

आया, वह गूँगा नहीं था । वह फुसफुसा रहा था, मानो अपने ही से बातें कर रहा हो ।

जमना : (उत्सुकता से) वह क्या फुसफुसा रहा था ?

आ० : वह कह रहा था कि कृपाराम को फँसाने वाला आदमी बुद्धेश्वर ही है । कृपाराम तो देवता था देवता । वह क्यों किसी का खून करता ? वह तीन बार देवता की पूजा करता था और वह भी नहा-धो कर । उसने गरीबों के लिए अपना घर-बार लुटा दिया था । उस फकीर को गुण्डे बुद्धेश्वर ने फँसाया था, क्योंकि बुद्धेश्वर की बेईमानी उसने देख ली थी । उसने बुद्धेश्वर को पैसे लेकर न्याय बेचते देख लिया था । बुद्धेश्वर जानता था कि कृपाराम उसकी पोल खोल देगा । इसीलिए पुलिस से मिलजुल कर रुपये ले-देकर कृपाराम को उसने फँसा दिया और मरवा डाला ।

बुद्धेश्वर : (विस्फारित नेत्रों से) हैं, वह यह बक रहा था ?

आ० : हाँ । मगर तुम इतने चौंक क्यों रहे हो ?

महेश : ये ही बुद्धश्वर हैं, जिनकी आप चर्चा कर रहे हैं ।

आ० : तब तो मैं वह जो कुछ भी आगे बोला था वह भी बतादूं ।

बुद्धेश्वर : (बेचैनी से) बताओ, बताओ ।

महेश-जमना : (एक साथ) हाँ, बताओ, जरूर बताओ ।

बुद्धेश्वर : (अत्यन्त घबराहट के साथ) —क्या कहा, बेनी ?

आ० : हां बेनी ही ।

कालूराम : अरे हाँ मैंने बेनी को उस दिन चाकू में धार करते हुए देखा भी था ।

महेश : बेनी मेरे सामने चिल्ला रहा था कि जल्द ही मैं इस चाकू से हत्यारे की हत्या कर डालूंगा ।

जमना : मेरे सामने भी वह बड़बड़ा रहा था —बुद्धेश्वर मेरा चाकू तेरा इंतजार कर रहा है ।

बुद्धेश्वर : (लड़खड़ाती आवाज में गिरते हुए) —बे······नी, ··· ···कृ···पा···रा···म ।

आ० : बुद्धेश्वर को क्या हो गया ?

महेश : (नाड़ी सम्हालते हुए) अरे नाड़ी का पता नहीं ।

जमना : बुद्धेश्वर भय से स्तम्भित हो गया है ।

आ० : (हाथ लगाते हुए) इसका हार्ट फेल हो गया है ।

(एकाएक बेनी का प्रवेश)

तुझे नही छोड़ूंगा बुद्धेश्वर, चाहे कुछ

आज मैं कृपाराम का बदला लेकर

देखकर) क्या ? चला गया ?

अपने बल से उसको खत्म कर

रते हुए) चलो अच्छा हुआ ।

ाम, देख, तू जहां भी हो

के प्रभाव से पापी अपने

ँसवा ही जाता है ।)

आ० : वह कह रहा था कि दुनियां कृपाराम को अपराधी समझे, मैं नही समझता, क्योंकि सब बात मुझे मालूम है। सचाई को मैंने कितनी बार पुलिस के सामने रखने की कोशिश की। पर वे मेरी बात माने ही नहीं। जैसे कोई शराबी सच बोल ही नहीं सकता हो। और एक निरपराधी का खून करवा कर ही माने। न्याय का उन्होंने गला घोटा है। न्याय की आत्मा को अपने बूटों के तले रौंदा है। मैं इस न्याय के नाम पर कसम खाता हूँ कि वृद्धेश्वर से कृपाराम के खून का बदला जरूर लूंगा। बस मौका भर मिल जाय। मुझे मौत का डर नहीं, मैंने शराब जरूर पी है, पर न्याय की आवाज पहचानता हूँ।

वृद्धेश्वर : (गिरती आवाज में) यह क्या सुना रहे हो ?

आ० : वही जो वह व्यक्ति बोल रहा था। मैं कसम खाकर कहता हूँ कि जो कुछ मैंने कहा है इसमें एक बात भी गलत नहीं है। उसने अपनी जेब से एक चाकू भी निकाला था शायद नया था, शायद शिकारियों वाल चाकू था। उसकी चमक से तो मेरी आंखे चौंधिया गई—और उसकी धार भी भयंकर थी, मैं तो दहल गया। अंतिम बात जो मैंने सुनी वह थी यदि मैंने कृपाराम का बदला नही लिया तो मेरा नाम बेनी नहीं।

बुद्धेश्वर : (अत्यन्त घबराहट के साथ) –क्या कहा, बेनी ?
आ० : हाँ बेनी ही ।
कालूराम : अरे हाँ मैंने बेनी को उस दिन चाकू में धार करते हुए देखा भी था ।
महेश : बेनी मेरे सामने चिल्ला रहा था कि जल्द ही मैं इस चाकू से हत्यारे की हत्या कर डालूंगा ।
जमना : मेरे सामने भी वह बड़बड़ा रहा था –बुद्धेश्वर मेरा चाकू तेरा इंतजार कर रहा है ।
बुद्धेश्वर : (लड़खड़ाती आवाज मे गिरते हुए) –बे……नी, ……कृ…पा…रा…म ।
आ० : बुद्धेश्वर को क्या हो गया ?
महेश : (नाड़ी सम्हालते हुए) अरे नाड़ी का पता नहीं ।
जमना : बुद्धेश्वर भय से स्तम्भित हो गया है ।
आ० : (हाथ लगाते हुए) इसका हार्ट फेल हो गया है ।

(एकाएक बेनी का प्रवेश)

बेनी : आज मैं तुझे नही छोड़ूंगा बुद्धेश्वर, चाहे कुछ भी हो जाय, आज मैं कृपाराम का बदला लेकर रहूंगा । (उसे गिरा देखकर) क्या ? चला गया ? न्याय के देवता ने अपने बल से उसको खत्म कर दिया ! (अट्टहास करते हुए) चलो अच्छा हुआ । कृपाराम, साधु कृपाराम, देख, तू जहाँ भी हो वहाँ से देख । तेरे तेज के प्रभाव से पापी अपने आप मर गया । (लगातार हँसता ही जाता है ।)

आ० : वह कह रहा था कि दुनियां कृपाराम को अपराधी समझे, मैं नहीं समझता, क्योंकि सब बात मुझे मालूम है। सचाई को मैंने कितनी बार पुलिस के सामने रखने की कोशिश की। पर वे मेरी बात माने ही नहीं। जैसे कोई शराबी सच बोल ही नहीं सकता हो। और एक निरपराधी का खून करवा कर ही माने। न्याय का उन्होंने गला घोटा है। न्याय की आत्मा को अपने बूटों के तले रौंदा है। मैं इस न्याय के नाम पर कसम खाता हूँ कि बुद्धेश्वर से कृपाराम के खून का बदला जरूर लूंगा। बस मौका भर मिल जाय। मुझे मौत का डर नहीं, मैंने शराब जरूर पी है, पर न्याय की आवाज पहचानता हूँ।

बुद्धेश्वर : (गिरती आवाज में) यह क्या सुना रहे हो ?

आ० : वही जो वह व्यक्ति बोल रहा था। मैं कसम खाकर कहता हूँ कि जो कुछ मैंने कहा है इसमें एक बात भी गलत नहीं है। उसने अपनी जेब से एक चाकू भी निकाला था शायद नया था, शायद शिकारियों वाला चाकू था। उसकी चमक से तो मेरी आंखें चौंधिया गईं—और उसकी धार भी भयंकर थी, मैं तो दहल गया। अंतिम बात जो मैंने सुनी वह थी यदि मैंने कृपाराम का बदला नहीं लिया तो मेरा नाम बेनी नहीं।

वृद्धेश्वर : (अत्यन्त घबराहट के साथ) –क्या कहा, बेनी ?

आ० : हाँ बेनी ही ।

कालूराम : अरे हाँ मैंने बेनी को उस दिन चाकू में धार करते हुए देखा भी था ।

महेश : बेनी मेरे सामने चिल्ला रहा था कि जल्द ही मैं इस चाकू से हत्यारे की हत्या कर डालूंगा ।

जमना : मेरे सामने भी वह बड़बड़ा रहा था –वृद्धेश्वर मेरा चाकू तेरा इंतजार कर रहा है ।

वृद्धेश्वर : (लड़खड़ाती आवाज मे गिरते हुए) –बे······नी, ··· ···कृ···पा···रा···म ।

आ० : वृद्धेश्वर को क्या हो गया ?

महेश : (नाड़ी सम्हालते हुए) अरे नाड़ी का पता नहीं ।

जमना : वृद्धेश्वर भय से स्तम्भित हो गया है ।

आ० : (हाथ लगाते हुए) इसका हार्ट फेल हो गया है ।

(एकाएक बेनी का प्रवेश)

बेनी : आज मैं तुझे नही छोड़ूंगा वृद्धेश्वर, चाहे कुछ भी हो जाय, आज मैं कृपाराम का बदला लेकर रहूंगा । (उसे गिरा देखकर) क्या ? चला गया ? न्याय के देवता ने अपने बल से उसको खत्म कर दिया ! (अट्टहास करते हुए) चलो अच्छा हुआ । कृपाराम, साधु कृपाराम, देख, तू जहाँ भी हो वहाँ से देख । तेरे तेज के प्रभाव से पापी अपने आप मर गया । (लगातार हँसता ही जाता है ।)

सोचा था क्या-क्या हो गया

सोचा था क्या-क्या हो गया

हरीश : (अखबार से हवा करने की आवाज) क्या गजब की गरमी है, यार।

शर्मा : वाकई, आज तो बहुत गर्मी महसूस हो रही है।

हरीश : यार, शर्मा मुझे तो लगता है कि इन्दौर की आबोहवा बदल रही है।

शर्मा : तुम इन्दौर की कहते हो, मैं कहता हूँ दुनियाँ की आबोहवा बदलती जा रही है।

हरीश : बिल्कुल ठीक कह रहे हो।

शर्मा : अणु अस्त्रों का प्रयोग जो न करे थोड़ा है।

हरीश : हमारे तटस्थ राष्ट्र की भी आबोहवा बदल दी भाइयों ने।

शर्मा : भूगोल में तटस्थता कहाँ तक जोर मारेगी ?

हरीश : मुझे तो लगता है कि इस साल बारिश भी जल्दी ही शुरू हो जायेगी।

शर्मा : चलो अच्छा है, वर्मा के लिए मौसम अच्छा हो जायेगा।

हरीश : साढ़े सात बज गये, पर आज तो वर्मा के पते ही नहीं चल रहे हैं। नहीं तो रोज हमारी राह देखता मिलता है।

शर्मा : बेचारा शादी की तैयारी में लगा होगा।

हरीश : शादी ? किसकी शादी ?

शर्मा : जी हां शादी, और मि० वर्मा की शादी। वर्मा दूसरों की शादी की खाक परवाह करेगा।

हरीश : यह क्या सुना रहे हो, यार ?

शर्मा : सच ही तो कह रहा हूँ। न जाने कौन से जनम के पुण्य काम आये बेचारे के।

हरीश : शादी की बड़ी कोशिश थी वर्मा को। मैं तो कहता हूँ उसे सारे शहर को न्योता देना चाहिए। उसका जीवन सफल हो गया। पर यह तो बताओ कि जो काम वह इतने लम्बे अर्से से नहीं कर सका, वह एकाएक कैसे कर लिया उसने ? मेरा खयाल है उसकी दूसरी पत्नी की मृत्यु दस साल पहले हो चुकी है।

शर्मा : तुम दस साल कह रहे हो—उसके लिए दस युग बीत गये।

हरीश : पर इस साठ पैंसठ साल की उम्र में उसे कौन उल्लू मिल गई ? यह उमर तो मौत से मुहब्बत करने की है उसकी। और फिर क्या सूरत पाई जनाब ने।

शर्मा : सूरत का मत कहो, यार। मैं तो उसके सामने कहता रहा हूँ कि "जो कुछ भी हो, खुदा की कसम लाजवाब हो।"

हरीश : वर्मा की शादी से, भई, मैं यह मानने लग गया कि यह तो मुकद्दर की ही बात है।

शर्मा : अमाँ, मुकद्दर को तो किसने देखा है ? मगर इस जमाने में उमर और सूरत की भी जरूरत नहीं है। फर्स्ट क्लास बंगला हो, चमचमाती कार हो, और जेब में माल हो, तो 'हेवन' से भी सुन्दरियाँ ट्रंक काल के ज़रिये शादी के प्रस्ताव भेजती हैं। यदि आदमी का बैंक बैलेन्स बढ़िया है तो और बैलेन्स कौन देखता है ?

हरीश : बात तो पते की कह रहे हो शर्मा। पर यह समझ में नहीं आ रहा है कि वर्मा को कामयाबी इतनी जल्दी कैसे मिल गई ? अपने राम को तो खबर भी नहीं मिली। पहली मर्तबा सुन रहा हूँ तुम्हारे मुँह से।

शर्मा : बेटा, तुम घर से निकलते भी हो ? मारे गर्मी के घर पर ही सड़ा करते हो। बेगम ने मारपीट कर घर से भगाया होगा, तो सात दिन में आज सूरत बता रहे हो। इन सात दिनों मे वर्मा ने पूरा मामला जमा लिया।

हरीश : (उत्सुकता से) सात दिन में मामला जमा लिया ? आखिर कौन-सी जादुई लकड़ी फिरा दी वर्मा ने ? या कोई वशीकरण मंत्र की सिद्धि कर ली है उसने कि सात दिन में अप्सरा हाजिर हो

गई है ?

शर्मा : बड़ा गुरू है है वर्मा । उसे कम मत समझना ।

हरीश : कुछ बताओगे भी कि उत्सुकता ही बढ़ाते जाओगे ?

शर्मा : सुन लो यार । तुम भी क्या कहोगे किसी रईस से पाला पड़ा है । पर किसी से कहना मत । सी० आय० डी० की खबर है ।

हरीश : किसी से न कहूंगा, बाबा । बोलो तो ।

शर्मा : वर्मा का प्लान बहुत पुराना था । इतना ही पुराना, जितना पुराना उसका वैधुर्य । तुम तो जानते ही हो कि चुग्घा कितनी पार्टियां उससे खा चुका है शादी का दिलासा दे-दे कर ।

हरीश : भगवान भला करे चुग्घा का । बीलगा वाली पार्टी का जायका, तो अभी तक मेरे मुह में है ।

शर्मा : चुग्घा जैसे दोस्तों से जब वर्मा निराश हो गया, तो उसने अखबारों की शरण ली । उसने एक बढ़िया विज्ञापन 'इंडिपेन्डेन्ट टाइम्स' में देने का निश्चय किया । जानते हो, उसने एडव्हरटाइज-मेन्ट का ड्राफ्ट किससे बनवाया था ?

हरीश : नही तो ।

शर्मा : अपने स्थानीय कालेज के अंग्रेजी विभाग के अध्यक्ष प्रो० शरण से ।

हरीश : शरण ने मंजूर भी कर लिया ?

शर्मा : शरण तो सरल आदमी है । उससे काम करवाना

कौन बड़ी बात है ? तो अखबारी दूत अपने देश के करीब-करीब सभी सम्भ्रान्त घर में पहुचे और प्रो० शरण की साहित्यिक सौम्य भाषा में वर्मा का प्रस्ताव सबको सुनाने लगे।

हरीश : तो ऐसा कहो कि शरण की कलम का नूर किसी हूर को फँसाने मे कामयाव हो गया।

शर्मा : फिर भूले। निहायत भुलक्कड़ किस्म के आदमी हो तुम। शरण की भाषा क्या काम करती, यदि वर्मा के पास सम्पत्ति का आकर्षण नही होता ? आजकल की बात नहीं है; यह तो बाबा आदम के जमाने से चला आया है। कहो तो अथारिटी कोट कर दूं, सीधी संस्कृत से।

हरीश : रहने दे यार। काम की बात कर।

शर्मा : मैं कोट करने के मूड मे था, पर छोड़ देता हूँ।

हरीश : यह तो बता यार, कि वर्मा के विज्ञापन का फिर क्या हुआ ?

शर्मा : सुनते हैं एक मुर्गी फँस गई।

हरीश : वह खुद. तो नहीं फँस गया ? सूरत शकल तो देख ली उसकी वर्मा ने ? ऐसा न हो कि विज्ञापन के चोंगे में कोई कानी, बहरी दुल्हन पल्ले पड़ जाय।

शर्मा : एक बात रिमार्केबल हुई। अखबार तो देश भर में दौड़े, पर मन चाही दुल्हन मिली बगल में ही।

इसी शहर के एक सबर्ब में रहती है।

हरीश : तब तो कोई खतरा नहीं।

शर्मा : पर सुना है लड़की ने शादी से पहिले वर्मा से मिलने से इन्कार कर दिया है, सिर्फ एक फोटो वर्मा के पास भेजी गई है, इस शर्त के साथ कि शादी से पहले वह लड़की को देखने का यत्न न करे। एक दूसरी शर्त भी है, कि शादी दो मिनट में होगी और वह भी बिलकुल अपने लोगों के सामने।

हरीश : वर्मा ने मान ली शर्तें ?

शर्मा : सहर्ष। वह तो सोचता है कि अब आगे पीछे दुल्हन घर अयेगी ही। फिर फोटो में उसकी सुन्दर छवि कुछ अंश में तो देखने को मिल ही गई है। जल्दबाजी से मामला बिगड़ सकता है।

हरीश : हम लोगों को तो वह निमन्त्रण देगा ही ?

शर्मा : देगा ही। बिना अपने उसकी शादी सम्पन्न हो ही कैसे सकती है ? ऐसे मौकों पर तो यार लोगों की दुआयें विशेष रूप से मांगी जाती हैं।

हरीश : शादी कब की तय हुई।

शर्मा : एक हफ्ते बाद।

हरीश : *(गिनते हुए)* याने एक अप्रैल को ?

शर्मा : तुझे तो मैथ्स में डिस्टिंग्शन मिला था, और बैंक में लोग तुझे केलक्युलेटिंग मशीन कहते हैं। तेरी

गिनती गलत कैसे हो सकती है ?

हरीश : अप्रैल-फूल तो नहीं बनाया जा रहा है, वेचारे को ?

शर्मा : भाई जान, अप्रैल की मजाक यूरोप मे चलती है। इंडिया याने अपने भारत में नहीं। और फिर विवाह-शादी के मामले में ऐसी बाते कतई नहीं की जातीं। कम से कम वर्मा को तो एक अप्रैल पर, एक खूबसूरत इंडियन फूल मिलने की उम्मीद है न कि अंग्रेजी फूल बनने की ? अच्छा यह बता तुझे निमन्त्रण मिला की नही ?

हरीश : अभी तक तो नहीं।

शर्मा : इसीलिए मजाक समझ रहा है। तेरा कार्ड यहीं आफिस में तो रखा है। (नोकर को आवाज देते हुए) वाय……ओ यू बाय, व्हेअर आर यू ?

नौकर : (दूर की आवाज) जी आया। (आते पदचाप)

शर्मा : देख हरीश का निमन्त्रण पत्र, टेवल पर रखा है, उठाकर ले आ।

नौकर : कौनसा निमन्त्रण पत्र बाबूजी ?

शर्मा : वही वर्माजी की शादी का। तुझे तो विशेप रूप से बुलाया उन्होंने।

नौकर : जो, हाँ। वर्मा साहब की कृपा है। अभी निमन्त्रण पत्र लेकर आता हूँ।

हरीश : चलो शर्माजी, वर्मा के यहाँ ही चलें।

शर्मा : अभी कौन सी मिठाई लिये खड़ा होगा वह ?

हरीश : अरे यार तुम तो ठहरे ब्राह्मण । जहां देखो मिठाई की ही सोचते हो । सपने में भी मिठाई देखते होगे ।

शर्मा : तू भी एक ही बात कहता है हरीश । अबे मिठाई न खाता तो जबान में मिठास कैसे आती ? अच्छा बताओ वर्मा के यहां करोगे क्या ?

हरीश : कोई काम-काज होगा तो पूछ लेंगे ।

शर्मा : चल, भाई, जैसी तेरी मरजी । पर कार्ड तो ले ले ।

नौकर : यह लीजिये बाबूजी ।

शर्मा : बाअदब, बामुलाहिजा हुजूर की सेवा में, यह ग्रेट वर्माजी की शादी का खूबसूरत 'इनव्हिटेशन कार्ड' पेश है । पढ़ने की इनायत फरमाइए ।

हरीश : जरूर, जरूर ।

शर्मा : जोर से पढ़िये । आपको उसने हिन्दी कार्ड दिया है । तुम्हारे नाम से उसे लगा कि तुम शायद अंग्रेजी नहीं जानते । मुझे भाई ने अंग्रेजी में कार्ड भेजा है । हिन्दी में क्या लिखा है जरा मैं भी तो सुनूं ?

हरीश : अच्छी बात है लो सुनो । (पढते हुए) "मान्यवर, परमेश्वर की असीम अनुकम्पा से मेरा शुभ विवाह कुमारी किरणबाला के साथ गुरुवार

जिन ढूंढ़ा तिन पाइयाँ, गहरे पानी पैठ ।
तू गुजरी सिर फिरी, रही अपने घर बैठ ।

हरीश : शर्माजी –तुमतो कविता भी करने लगे ?

शर्मा : यार ठीक फरमाते हो । मैं तो कविता भी करने लगा, और तू गद्य भी भूलता जा रहा है । घर से बाहर निकला कर; नहीं तो जिन्दगी के खूबसूरत नजारे तुझे नजर नहीं आ सकते ।

हरीश : अच्छा यार अब चल भी ।

(मोटर स्टार्ट होने की आवाज)

(संगीत)

(चहल पहल, जो किसी समारोह को इंगित करती है, का शब्द)

हरीश : (दूर की आवाज) हलो वर्मा जी गुड इव्हनिंग ।

शर्मा : (दूर से ही) –भई हमारा भी नमस्कार ।

वर्मा : आइये, आइये ।

शर्मा : यूं नहीं । गाना गाकर कहो "आइये, पधारिये" आज दिख रहे हो पूरे पच्चीस साल के । क्या बात है ? इतने दिनों से तुम्हारी जवानी कहाँ चली गई थी ?

हरीश : हाँ वर्मा जी । आज तो आप पूरे नवयुवक नजर आ रहे हो ।

वर्मा : नजर आ रहा हूँ, अरे भाई अभी मेरी उम्र ही क्या है ? बुरा हो इस हिन्दुस्तान का, जहाँ लोग आदमी को पचास साल में ही बूढ़ा कहने लगते

हैं। आप जरा यूरोप जाकर देखिये, पचास साल से तो वहाँ आदमी की युवा अवस्था प्रारम्भ होती है।

शर्मा : अरे, अरे। आप पूरे हिन्दुस्तान को क्यों कोस रहे हैं? इसमें आप और हम सरीखे लोग भी तो रहते हैं। क्या हम लोग यूरोप वालों से कम हैं? (सब हँसते हैं)

वर्मा : हाँ भई शर्मा, तुम ठीक ही कह रहे हो।

हरीश : वर्माजी बहुत थोड़े लोग नजर आ रहे हैं? विशेष कर चुग्घा तो नजर ही नहीं आ रहा है?

वर्मा : (खीजते हुए) —चुग्घा की तुमने खूब कही। अरे यार वह भी क्या आदमी है, जो दोस्तों को उल्लू बनाये। मैं तो कहता हूँ आदमी नहीं, पजामा है।

शर्मा : खैर उसे आप पजामा कहिये या बनियान। वह दिखाई नहीं दे रहा है। उसे नहीं बुलाया क्या?

वर्मा : उसका तो मैं जिन्दगी भर मुँह नहीं देखूंगा।

हरीश : खैर। वधू पक्ष का कोई आदमी नहीं दिखाई दे रहा है। कोई अभी तक नहीं आया क्या?

वर्मा : अभी ५ मिनट का वक्त है। आते ही होंगे। उन्होंने………

शर्मा : याने मिस किरणबाला ने?

वर्मा : जी, हाँ, मिस किरणबाला ने ही लिखा था, कि

वह अपने समाज के साथ ऐन वक्त पर पहुचेंगी ।

हरीश : इंगलिश टाईम से आयेगीं शायद ।

वर्मा : जी, बिलकुल ठीक कहा आपने । किरणबाला जी इगलैन्ड में एक अर्से तक रही हैं, लिहाजा वही आदतें आ गई हैं उनमें । आप लोग शायद नहीं जानते, कि वह बार, एट–ला– है ।

शर्मा : वर्मा जी आपकी तकदीर खुल गई ? इतनी पढ़ी-लिखी लड़की आपको इस उमर में मिल गई ।

वर्मा : वाकई, शर्माजी आप ठीक फरमा रहे हैं । किरण बालाजी मेरी जिन्दगी में एक ऐसा उजाला लेकर आ रही हैं जो मेरे इस जीवन को स्वर्ग बना देगा ।

हरीश : वर्मा जी आप ठीक कह रहे हैं । यदि मुकद्दर हो तो यह दुनियाँ ही स्वर्ग बन जाती है ।

शर्मा : ठीक बिल्कुल ठीक । किरणबाला जी तो देवलोक से आई ही हैं । इसलिए अब वर्माजी का मृत्यु लोक स्वर्गलोक में तबदील हो जाने में क्या सन्देह रह सकता है ।

(एकाएक आते पदचाप)

एक आवाज: मि० वर्मा कौन हैं ?

शर्मा : यह खड़े वर्माजी ? आप कहाँ से तशरीफ ला रहे हैं ?

वही आवाज: मैं किरणबाला जी का खत लेकर आया हूँ ।

यह लीजिये । अच्छा अब मैं चलता हूँ ।

शर्मा : ऐसी भी क्या जल्दी है, रुक जाइये । वर्मा जी को खत तो पढ़ लेने दीजिये ।

वही आवाज: नहीं साहब, मुझे जरा जरूरी काम है । अच्छा नमस्ते ।

(पद चाप)

शर्मा : लीजिये वर्माजी, आपका खत ।

वर्मा : लाईये, लाईये । (पत्र का लिफाफा फाड़ने का स्वर)

हरीश : यह क्या वर्मा जी, आपके मुँह का रंग क्यों उड़ता नजर आ रहा है ? कोई खराब खबर तो नहीं है ?

वर्मा : लो शर्माजी, आप पढ़ लो फिर वही बेइमान चुग्घा सामने आ गया ।

शर्मा : अच्छी बात है ? लो तुम भी सुनो हरीश । (पढ़ते हुए) "प्रिय वर्माजी, अफसोस है, कि मैं टाईम पर नही आ सकता हूँ । क्योंकि इससे कोई लाभ नहीं है । आपके दुखी दिल को राहत देने के लिये मैं कुछ दिनों के लिए किरणबाला बन गया था, चाहता था, कि पत्र व्यवहार द्वारा ही मैं आपके दिल में नवजीवन का संचार करता रहूँ । पर आप तो शादी पर तुले थे । लिहाजा मुझे अपना भेद खोलना ही पड़ रहा है । मैं किरणबाला नही, आपका प्यारा मित्र चुग्घा

हूँ, जिसने एक नेक उद्देश्य से किरणवाला बनना स्वीकार कर लिया था। आप चाहें तो सारे वाकिये को एक अप्रैल की मजाक भी कह सकते हैं। आप इन्तजार कर रहे होंगे, इसीलिए यह खत भेज रहा हूँ। शेष, मिलने पर।

आपका अपना, चुग्घा।

हरीश : मुझे तो पहिले ही शक था, पर चुग्घा पर नहीं।

शर्मा : सोचा था क्या और क्या हो गया?

युगधर्म

पात्र-परिचय

संपत	:	एक अनुभवी जेबकट
शर्मा	:	एक छोटा राजनैतिक नेता
वर्मा	:	एक गरीब वकील
सुधीन	:	एक अदना साहित्यकार।

(रेल्वे प्लेट फार्म का कोलाहल, और एक क्षण बाद ट्रेन चलने की आवाज)

शर्मा : मैं कह रहा हूँ उतर जाइये । कम्पार्टमेन्ट में जगह नहीं है ।

वर्मा : क्यों जी, सुन नहीं रहे हो । कोई दूसरा डिब्बा देखिये ।

सुधीन : समझदार आदमी वह है जो लोगों के कथन की अवहेलना न करे । भेड़ों की तरह एक ही डिब्बे में घुसे चले आना असभ्यता है, जनाब ।

संपत : आप सभी ठीक फरमा रहे हैं । मगर जब पूरी गाड़ी भरी हो, तो जबरदस्ती चढ़ना मजबूरी हो जाती है । काश आप लोग इसे समझ पाते ।

शर्मा : अभी भी वक्त है भाई, उतर जाओगे ।

संपत : गाड़ी चल पड़ी है, अब नीचे उतरना खतरा मोल लेना है । यदि आप लोग यही पसन्द करते हैं कि मैं डिब्बे में दाखिल नहीं होऊँ तो फुट-होल्ड पर ही खड़े-खड़े चला चलूंगा ।

सुधीन : अच्छा आ जाने दो, शर्माजी वक्त और कुछ हो गया तो रेल लेट हो जायगी । और मीटिंग

एड्रेस करने वक्त पर नहीं पहुँच पायेंगे।

शर्मा : पर आपको तो कहानी का मसाला मिल जाएगा।

वर्मा : कानून कहता है कि कम्पार्टमेन्ट में हर एक आदमी को बैठने का अधिकार है। लिहाजा मि……क्या नाम है…तुम्हारा………तुम अन्दर आ सकते हो।

(दरवाजा खोलने का शब्द)

सपत : (दरवाजा लगाते हुए) धन्यवाद……… ।

शर्मा : अब आप खड़े क्यों हैं ?

संपत : क्या करें साहब ! जब लोगों की मरज़ी यही है कि मैं खड़ा रहूँ तो खड़ा ही रहूँगा। झगड़ा करना मुझे नहीं आता।

सुधीन : नहीं साहब, यह भी कोई बात है। जब तलक आप इस कम्पार्टमेन्ट में दाखिल नहीं हुए थे, हम आपको कहते रहे कि इस कम्पार्टमेन्ट में कतई जगह नहीं है। मगर अब जब आप आ ही गए हैं तो भेद-भाव कैसा ?

वर्मा : देट्स…इट… यही स्प्रिरिट होना चाहिए।

संपत : आप सब लोगों का आग्रह है तो लीजिए, बैठ जाता हूँ।

वर्मा : व्हाट इज युवर नेम प्लीज ?

संपत : जी ?

वर्मा : मेरा मतलब है आपका नाम क्या है ?

संपत : मतलब तो मुझे पहिले ही समझ में आ गया था, जब आपने अंग्रेजी में प्रश्न किया था। मगर मैं नहीं चाहता कि कोई मुझसे अंग्रेजी में बात करे, और मैं उसे उसी भाषा में जवाब दूँ ।

सुधीन : बहुत अच्छे। इसी भावना से हम राष्ट्रभाषा हिन्दी का उपकार कर सकते हैं ।

शर्मा : जनता की भाषा में बोलना वास्तव में एक बहुत अच्छा खयाल है ।

सुधीन : आपने नाम नहीं बतलाया ?

संपत : जी, मेरा नाम संपत कुमार है । संक्षिप्त में आप संपत कह सकते हैं, और यदि संपत ठीक से नहीं बोल पाये, तो चंपत कह कर भी आप बुला सकते हैं ।

वर्मा : व्हेरी गुड ।

शर्मा : अब मैं आपका थोड़ा परिचय इन लोगों से भी करा दूँ । हम सफर तो परिचित रहे तो ही अच्छा रहता है ।

संपत : मुझे बड़ी खुशी होगी आप लोगों का परिचय पाकर ।

शर्मा : मैं तो शहर बिजनौर का न्यूट्रल पार्टी का नेता हूँ । मेरा नाम शर्मा है । कल ही मुझे १०१) की थैली भेंट की गई । वहीं से आ रहा हूँ ।

वर्मा : एन्ड मायसेल्फ—अर्थात् मैं बिजनौर का एडव्होकेट हूँ।

सुवीन : और साहब मैं तो बिजनौर का एक छोटा-सा साहित्यिक हूँ। संगम नामक मासिक पत्र का सम्पादन भी करता हूँ।

वर्मा : आइ फील, सौरी टू से। मुझे आपका नाम बड़ा अजीब लगा मि० संपत।

सपत : आप सभी लोगों का परिचय पाकर मुझे हार्दिक प्रसन्नता हुई है। और वर्माजी, जहां तक आपका कहना है कि मेरा नाम अजीब है, वह सही है। मगर हमारे देश में आमतौर से अजीब नाम रखने का रिवाज है। तांबे, लोन्डे, घाटे, माटे, आदि नाम तो आपने सुने ही होंगे। दमड़ीमल, छज्जूमल, कचौड़ीमल, मंगाराम आदि सैकड़ों ऐसे नाम हैं और हर फिरके में है, जिन्हें आप अजीब कह सकते हैं, मेरे नाम से भी अजीब-अजीब।

वर्मा : यू आर परफैक्टली राईट। बिल्कुल ठीक कहा आपने।

सुवीन : नाम में क्या रखा है साहब। यह तो केवल एक डिनोटेशन है। नाम की इजाद ही इसलिए हुई कि हम व्यक्ति विशेष को पुकार सकें।

शर्मा : नाम तो व्यक्ति की समझ की चीज है। यह

उसका अधिकार है, उसमें हस्तक्षेप हम लोग कैसे कर सकते हैं ?

संपत : पर एक बात मैं जरूर कहूँगा कि ऐसे नाम पूरे समाज के नहीं तो कम से कम व्यक्तियों के एक बड़े समूह की कल्पनाहीन प्रकृति के द्योतक जरूर हैं।

शर्मा : आप क्या काम करते हैं सपतजी ?

संपत : मैं न तो आपकी तरह कोई राजनैतिक नेता हूँ, न वर्माजी की तरह वकील और न सुधीनजी की तरह साहित्यिक। मैं तो एक छोटा कलाकार मात्र हूँ।

वर्मा : मि० सपत, मैं आपसे एक क्वेश्चन पूछता हूँ कि क्या आपको कोई और काम नहीं मिला कि आप कला के पीछे पड़ गये। आप यंग आदमी हैं, जिन्दगी वेस्ट न कीजिए। कला का अंचल आलसी लोग पकड़ा करते हैं।

सुधीन : आप क्या कह रहे हैं वकील साहब ? आप तो जिन्दगी की गन्दगी में सिर से पैर तक डूबे रहते हैं। जीवन का घिनौना रूप ही आप अदालतों में देख पाते हैं, और वही रूप आपके दिमाग में घूमता रहता है। काश आप कला के मनोहर उपवन की जीवनदायी पवन के स्पर्श का अनुभव कर पाते ?

वर्मा : भई, अपना तो खयाल है कि कला को मानना ही तो रुपया कमाने की कला ही सबसे बड़ी कला है, बाकी सब बकवास है।

संपत : वर्मा साहब, मैं कलाकार इसी अर्थ में हूँ। जिस अर्थ में आप कला को ले रहे हैं। मेरे ख्याल से कला का मर्म यही है कि लोगों के जेब से पैसे निकाले जायँ।

वर्मा : ठीक कह रहे हो, इसीलिए वकील सबसे बड़ा कलाकार है, वह लोगों की जेब से पैसे निकालना जानता है।

सुधीन : फिर शरत्, प्रेमचन्द, रवीन्द्र आदि साहित्यकारों को आप क्या कहेंगे ?

वर्मा : कलाकार— क्योंकि उन्होंने भी लोगों की जेबें खाली ही करवाईं।

सुधीन : (कुछ सोचते हुए) पैसे कमाना कला तो नहीं, युगधर्म कहा जा सकता है।

संपत : तो इसे युगधर्म ही कह लीजिए।

शर्मा : इसे युगधर्म ही कहा जाना चाहिए। एक वक्त युगधर्म था, सत्याराधन। हरिश्चन्द्र उसी युग में हुए थे। दूसरे समय युगधर्म था, बलाराधन। श्रीकृष्ण, भीम, इसी युग के समर्थ पुरुष थे। तीसरा युग आया द्रव्य-धर्म का, रुपयाराधन। अमेरिका में इस धर्म की सबसे अधिक वृद्धि हुई

है। यही धर्म आजकल चल रहा है।

सुधीन : तो पैसा कमाना ही युगधर्म है।

वर्मा : इस बात से इन्कार करना मुश्किल है।

संपत : मैं कहता हूँ, असम्भव है। हाँ, एक बात है। इस धर्म के अनुयायी अपने-अपने ढग से द्रव्य धर्म की उपासना करते हैं। कोई राजनीति से कमाता है, कोई व्यापार नीति से और कोई छलनीति से। कोई-कोई पूजा जाता है, और कोई दुत्कारा जाता है।

वर्मा : यही तो गल्त है। वकील को लोग छलनीतिज्ञ कहते हैं। यह सरासर गलत है। वकील तो कपटियों से सज्जनों को बचाता है।

शर्मा : राजनीतिज्ञ, समाज की सेवा कर जो कुछ मिल जाता है, लेकर सन्तुष्ट रहता है।

सुधीन : साहित्यकार— कला के माध्यम से जन-रंजन कर, जो उसे प्राप्त होना है, स्वीकार कर लेता है।

संपत : मैं तो कहता हूँ कि जिसे दुनियाँ जेब कतरा कहती है, वह भी इसी धर्म का उपासक है। यदि राजनीति-सेवा के बहाने जेब कतरना गलत नही है, व्यापार के नाम पर जेब कतरना—गलत नही है, कला के नाम पर, साहित्य के नाम पर जेब कतरना गलत नहीं है तो पेट की आग बुझाने के

लिए, बेकारी से निजात पाने के लिए, जिन्दगी के तार को बरकरार रखने के लिए जेब कतरना क्यों बुरा है ?

(ट्रेन रुकने की आवाज। लोगों के चढ़ने-उतरने का शब्द)

अच्छा साहब मैं तो चला। आप सब लोगों को धन्यवाद। मुझे कोसने के पहिले मेरी बात और युगधर्म की चर्चा भूल जाइयेगा।

शर्मा : ऐसे कैसे हो सकता है।

वर्मा : नो, नो, वुई जुड नेव्हर डू देट।

सुधीन : बन्धु, हम तुम्हारे साथ अनर्थ कैसे कर सकते है ?

(संगीत)

(ट्रेन रुकने का शब्द, और कोलाहल)

शर्मा : उतरो भाई, आ गई, मंजिल।

वर्मा : समेटो असबाब।

सुधीन : हाँ, भाई उतरें, अपना नगर आ गया। अब घर के लिए मन बेकरार हो गया।

शर्मा : (हड़बड़ाते हुए) मेरा पर्स कहाँ गया।

वर्मा : पर्स तो मेरा भी गया है।

सुधीन : हाय, मेरा बटुआ।

शर्मा : लगता है वह युगधर्मी ले गया।

वर्मा : वही लफंगा ले गया होगा।

सुधीन : बदमाश ने निर्धन साहित्यिक को भी नहीं छोड़ा।

वर्मा : (दिलासा देते हुए) भाई—यही तो युगधर्म है कि

सबका माल समेटो और अपने घर में ले बैठो।

सुधीन : अब पछिताये होत क्या, चिड़िया चुग गईं खेत।

शर्मा : वाह रे संपत। तू ही सच्चा युगधर्मी निकला, जो हमारे पर्स लेकर देखते-देखते चंपत हो गया। दुख इतना ही है कि तुझे हम समय रहते नहीं पहिचान पाये।

वर्मा : मैंने अपने वकालत के प्रोफेशन में इससे ज्यादह बदमाश नहीं देखा। यदि मैं उसे पहले पहिचान लेता तो कोर्ट से मैक्सिमम पनिशमेन्ट दिलवाता।

सुधीन : भैया, जब द्रव्य को युगधर्म मान लिया तो अब यह कुढ़न, यह जलन, सब बेकार है। यह तो ठीक हुआ कि हमारे टिकट बच गए, नहीं तो रेल्वे वाले हमें नहीं छोड़ते और भगवान जाने क्या होता?




প্রকাশন


প্রকাশন

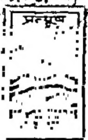

প্রকাশন


প্রত্যূষ


প্রত্যূষ


প্রত্যূষ
প্রকাশন


প্রত্যূষ


প্রত্যূষ


প্রত্যূষ
প্রকাশন


প্রত্যূষ
প্রকাশন


প্রত্যূষ
প্রকাশন


প্রত্যূষ
প্রকাশন